मूल्य १०/-

मान मन्दिर बरसाना

मासिक पत्रिका, भाद्रपद-आश्विन, श्रीकृष्ण सं.५२५०, वि.सं. २०८१ (सितम्बर २०२४ ई.), वर्ष ०८, अंक ०९

राधाष्टमी विशेषांक

राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा

बरसानो जानो नहीं, रट्यौ न राधा नाम | तौ तैनें जान्यौ कहा, ब्रज कौ तत्त्व महान ||

हरियाली तीज एवं झूलन महोत्सव की झलकियाँ

अनुक्रमणिका

विषय- सूची — पृष्ठ- संख्या

१ श्रीराधिकाजन्मलीलाभूमि 'वृषभानुभवन'.....०५
२ श्रीराधाकृपाकटाक्ष स्तोत्र.....०८
३ श्रीराधिका की बाल-लीलाएँ.....११
४ अनुपम करुणाशीलिनी 'श्रीकिशोरीजू'.....१३
५ श्रीबरसाने में नित्य श्यामसखी.....१५
६ श्रीराधा-कृष्ण का शाश्वत सम्बन्ध.....१८
७ असली औषधि 'संतों का वात्सल्य-प्रेम'.....२०
८ संकीर्तन से ब्रजसेवा सहज.....२३
९ संत-कृपा से ही भक्ति सम्भव.....२५
१० भक्तिमय भूमि 'भारतवर्ष'.....२९
११ कल्याणकारी तीर्थ 'गौ-भूमि'.....३०
१२ परमानन्दकारी 'संत-पदार्पण'.....३१

INSTAAL करें ---
PLAY STORE से-----
MANINI APP
बाबाश्री के सत्संग/कीर्तन/भजन, साहित्य, आदि यहाँ से FREE - DOWNLOAD कर सकते हैं व सुन सकते हैं।

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ८.०० से ९:०० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ८:०० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं।

कृष्णजन्म-बधाई

नन्द के भये नंदलाल, बिरज में आनन्द भयो ॥
कौन ने पूजे कूआं बावड़ी, कौन ने पूजे ताल,
यशोदा ने पूजे कूआं बावड़ी, नन्द जू ने पूजे ताल ।
कौन के बाजे ढोल मंजीरा, कौन के नगारे पै ढाल,
यशोदा के बाजै ढोल मंजीरा, नन्द जू के बाजे ढाल ।
कौन ने बांटे लड्डुआ गूंजा, कौन ने छकाये माल,
जसुदा ने बांटे लड्डुआ गूंजा, नन्द जू ने छकाये माल ।
कौन पहराये लहंगा फरिया, कौन ने पटका माल,
जसुदा पहरावे लहंगा फरिया, नन्द जू ने पटका माल ।
कौन ने लुटाये गहना गुरिया, कौन ने हीरा लाल ।
नांचै गावैं सब ब्रजवासी, उछर-उछर दैं ताल,
दै असीस मगन सब गोपी, चिरजीवो गोपाल ॥

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –

"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले।"

* योजना *

अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकालें व मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवाद्रव्य किसी विश्वसनीय गौसेवा प्रकल्प को दान कर गौरक्षा कार्य में सहभागी बन अनन्त पुण्य का लाभ लें। हिन्दूशास्त्रों में अंशमात्र गौसेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है।

संरक्षक- **श्रीराधामानबिहारीलाल**, प्रकाशक – **राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर, गह्वरवन, बरसाना, मथुरा** (उ.प्र.)
mob. **राधाकांत शास्त्री** .....9927338666, Website :www.maanmandir.org, (E-mail :info@maanmandir.org)

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें। हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है – **सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ। जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि॥** (श्रीमद्भागवत३/७/४१)
अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं हो सकता।

प्रकाशकीय

'बरसाना' के अनेक नाम हैं, जैसे रस की वर्षा होने के कारण **'बरसाना'**, श्रेष्ठ पर्वत चोटी होने के कारण **'वरसानु'**, वृषभानु की राजधानी होने के कारण **'वृषभानुपुर'** और बड़ी शिखर होने के कारण **'वृहत्सानु'** । यद्यपि वृन्दावन में ही 'बरसाना' है किन्तु श्रीजी के स्थाई निवास के कारण यहीं से सम्पूर्ण वृन्दावन रसमय बनता है । वे श्रीजी हम सभी के हृदय की अमूल्यमणि 'बरसाने' में ही नित्य विराजती हैं, यहाँ के वास की आस शिवजी और शेषजी भी करते हैं – **"बरसाने के वास को, आस करें शिव शेष । ह्याँ की महिमा को कहे जहाँ कृष्ण धरे सखि वेष ॥"** सम्पूर्ण ब्रज-वृन्दावन का रत्न, वृषभानुभवन-बरसाना में ही रहता है, जिसके प्रलोभन में 'सच्चिदानन्द ब्रह्म' भी चोर बनकर बरसाने में आते हैं – **"ब्रज में रतन राधिका गोरी । हर लीनी वृषभानु भवन ते, नंदसुवन की चोरी ॥"** (श्रीकृष्णदासजी)

बरसाने में श्रीकृष्ण छद्म से सखी वेष धारण कर राधा-दर्शनार्थ आते हैं । 'बरसाने' का यह गौरव राधिकारानी के ही कारण है; ऐसे परमानुपम महिमामय 'श्रीबरसानाधाम' का संक्षिप्त इतिहास इस प्रकार है –

गौसेवा के प्रताप से संतानविहीन राजा दिलीप के पुत्र रघु ..... धर्म इत्यादि हुए, जिसमें सबसे छोटे पुत्र 'धर्म' की भी गौ-सेवा करने में सर्वाधिक रुचि होने के कारण राज्य लेना स्वीकार नहीं किया और आजीवन गौसेवा ही करते रहे, इन्हीं के वंश में आगे चलकर अभयकर्णजी हुए, जो शत्रुघ्नजी के साथ ब्रजभूमि में आये, ये भी बहुत बड़े गौभक्त थे । जब अभयकर्णजी यहाँ आये तो बड़े प्रसन्न हुए और गौसेवा करने लग गए । इसीलिए रघुवंश का यह एक अलग वंश आता है, इन्हीं के वंश में रशंगजी हुए, जिन्होंने बरसाना बसाया है और इन्हीं के वंश में राधारानी का प्राकट्य हुआ । रशंगजी के वंश में ही राजा वृषभानु और श्रीराधारानी हुई हैं । ये सूर्यवंशी थीं और श्रीकृष्ण चंद्रवंशी थे ।

महारानी कीर्तिजी धन्य हैं, जिनके यहाँ राधारानी जन्मी । महारानी कीर्ति मानवी कन्या नहीं हैं, इनका अवतार हुआ है । किसी समय में अपने पूर्व जन्म से पहले ये तीन पितृश्वरों की दिव्य कन्यायें थीं । ये कथा शिवपुराण (पार्वती खण्ड, अध्याय-२) में आती है । जब ये श्वेतदीप गयीं तो वहाँ सनकादि आये, इन्होंने उठकर सम्मान नहीं किया तो उन्होंने श्राप दे दिया कि तुम मानवी बन जाओ । भगवान् ने कहा कि ये वरदान है, श्राप नहीं है; तुम्हें नित्य शक्ति को जन्म देने का अवसर मिलेगा । उन तीनों कन्याओं में से एक सीताजी की माँ बनी – **'सुनैना'**, एक पार्वतीजी की माँ बनी – **'मैना'** और एक राधिकाजी की माँ बनी – **'कलावती'** । ये कलावती के रूप में प्रकट हुईं, जो महाराज सुचन्द्र की स्त्री बनीं; दोनों ने बड़ा तप किया, उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी प्रकट हुए और उनसे वरदान माँगने को कहा । इस तरह महाराज सुचन्द्रजी को मोक्ष का वर प्राप्त हुआ । कलावतीजी बोलीं – ब्रह्मा ! मैं तुमको श्राप दे दूँगी, तुमने मेरे रहते इनको मोक्ष क्यों दिया ? ब्रह्माजी घबरा गए क्योंकि ये महासती थीं । वे बोले कि ठीक है, ये कुछ दिन तक यहाँ ऊपर रहेंगे और फिर तुमको गोलोकेश्वरी की माँ बनने का सौभाग्य मिलेगा, उसके बाद तुम्हारे साथ ही धाम में जायेंगे । वे ही महाराज सुचन्द्र और वही कलावती फिर से यहाँ प्रगट हुए । कलावती 'कीर्ति' हुई और इनकी कूँख से 'श्रीराधारानी' भादों शुक्ल अष्टमी को श्रीवृषभानुभवन में प्रकट हुई । इस बार श्रीराधाष्टमी की पूर्व रात्रि वेला में 'श्रीमच्चैतन्यमहाप्रभुजी की लीलाओं' का नाट्य-मंचन प्रस्तुत होगा ।

कार्यकारी अध्यक्ष

राधाकान्त शास्त्री

श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

श्रीराधिकाजन्मलीलाभूमि 'वृषभानुभवन'

श्रीबरसाना गाँव चारों ओर वन-कुञ्जों से घिरा है, प्रेमवन, मानेंगितवन, मयूरवन, गहवरवन, आदि । इसीलिये श्रीलाड़ली जी से सखियाँ प्रार्थना करती हैं कि नन्दलाल ब्रज में बरसाना छोड़कर कहीं नहीं जाते हैं, आप इन पर प्रेम वर्षा करें । भानुगढ़ पर महाराज वृषभानुजी का महल बना, जहाँ श्रीराधा का प्राकट्य, बाल, पौगण्ड एवं कैशोर आदि लीलाएँ होती हैं ।

यत्प्रादुरस्ति कृपया वृषभानुगेहे । स्यात्किकरी भवितुमेव ममाभिलाषः ॥ (श्रीराधासुधानिधि - ४०)

तथा तत्रैव – **सा काचिद् वृषभानुवेश्मनि सखीमालासु बालावली ।**
मौलिः खेलति विश्वमोहनमहासारूप्यमाचिन्वती ॥ (श्रीराधासुधानिधि – २२५)

तथा **'नन्दिग्रामे वृहत्सानौ कार्या राज्यस्थितिस्त्वया ॥'** (भागवतमाहात्म्य, स्कन्दपुराण - १/३८)

श्रीवृषभानुपुरशतक से – **जयत्यशेषाद्भुतमाधुरी सा, पुरी वृषाट्टस्कर्रराजकस्य ।**
यन्नाम श्रृण्वन्ननुनंदसूनु र्वृजत्यवस्थां जड़िमाभिधानाम् ॥ (श्रीवृषभानुपुरशतक - १)

अर्थात् – सम्पूर्ण माधुरी वाली, वृषभानुपुरी विजय को प्राप्त हो रही है, जिसके नाम को सुनकर ही 'श्रीकृष्ण' प्रेम मूर्च्छा को प्राप्त हो जाते हैं ।

श्रीवृषभानुभवन – यत्रास्ति श्री मद्वृषभानु मन्दिरं प्रभासहस्त्रामल चंद्र सुंदरम् ।
यज्ज्योत्स्नया राजितनंदमंदिरे चिक्रीडबाल्ये ननु नंदनंदनः ॥ (श्रीवृषभानुपुरशतक – ३)

अर्थात् – "जहाँ श्रीवृषभानुमन्दिर है, जिसकी प्रभा सहस्त्रों निर्मल चन्द्रमाओं से भी निर्मल है एवं जिसकी प्रभा से ही नन्दभवन भी शोभित होता है, जहाँ बाल कृष्ण खेलते हैं । भाव यह है कि बालकृष्ण को श्रीराधा विरह न व्यापे । इसीलिए भानुभवन की गौर किरणें नन्दग्राम जाकर नन्दभवन पर छा जाती हैं । इस प्रकार उन्हें सतत् श्रीराधा मिलन होता रहता है ।" यद्यपि वर्तमान मन्दिर पाँचवा मन्दिर है । इसके पूर्व के चार मन्दिर पास में ही सटे हुए हैं । सबका इतिहास छोटी-सी पत्रिका में नहीं दिया जा सकता है । स्थल वही है, मन्दिर में परिवर्तन होता रहता है ।

यहाँ सबसे पहले राधारानी ने कहा था, श्याम सुन्दर से –

'ततो राधा प्रियं कृष्णं वाक्यमूचे कृतार्थकृत् । मम पितृपुरे त्वं हि मया सह प्रतिष्ठतु ॥' (ब्रजभक्तिविलास)

इस श्लोक से बरसाने की महिमा का पता चलता है । श्रीजी श्याम सुन्दर से कहती हैं कि हमारे पिता के गाँव का नाम 'वृषभानुपुर' (बरसाना) है, जहाँ रस वर्षा होती रहती है । आज भी यहाँ रस बरसता रहता है, ऐसी छटा ब्रज में कहीं नहीं है ।

श्रीजी बोलीं – "हमारे पिता के इस गाँव में तुम मेरे साथ यहाँ रहा करो । इससे ब्रह्मा भी कृतार्थ हो जायेंगे और मेरी भी प्रीति बढ़ेगी ।" इसलिए यहाँ पर श्रीजी के मन्दिर में ठाकुर जी भी रहते हैं । भले ही चूनर ओढ़ा देते हैं, सखी वेष में रहते हैं ताकि कोई जान ना पावे । महात्मा लोग कहते हैं कि ऐसा संसार में कहीं नहीं है, जहाँ कृष्ण सखी वेष में रहते हैं । ऐसा केवल बरसाने में है, जो पूर्ण पुरुषोत्तम पुरुष सखी बने ।

अति सरस्यौ बरसानो जू । राजत रमणीक रवानों जू ॥
जहाँ मनिमय मन्दिर सोहै जू । उपमा को रवि-शशि को है जू ॥
नित होत कुलाहल भारी जू । मन मुदित सकल नर-नारी जू ॥
वृषभानु गोप जहाँ राजै जू ।

श्रीलाड़िलीजी का प्राकट्य

वर्तमान काल में विराजमान श्री लाड़िली जी का विग्रह १६२६ सम्वत् में आषाढ़ शुक्ल नारायण भट्टजी के द्वारा प्रस्थापित है । उस समय भट्ट जी के द्वारा अनेकों विग्रहों का प्राकट्य हुआ । सम्पूर्ण ब्रज भक्त पूज्य श्रीनारायण भट्ट

गोस्वामी जी के साहित्य द्वारा ब्रज स्वरूप को सन्मुख लाने के लिए उनके इस प्रणयन श्रम के लिए सदा-सर्वदा ऋणबद्ध ही रहेंगे ।

श्रीनारायणभट्टजी की उद्भट प्रतिभा

ब्रजाद्याचार्य श्रीश्रीनारायण भट्ट गोस्वामी जी ही वे महापुरुष हैं, जिन्होंने ब्रज धरणी के लुप्त-गुप्त स्वरूप को जन साधारण के नेत्रोन्मुख किया । दक्षिण देश में मदुरापत्तन स्थान में भृगुवंशी, श्रीवत्सगोत्रीय, ऋग्वेदी, भैरव नामक महान विद्वान तैलंग विप्र का प्रवास था । ये मध्व मतावलम्बी वैष्णव बड़े कृष्ण भक्त थे । इनके पुत्र थे श्रीरंगनाथ । भक्त रंगनाथ जी का चरित्र भविष्योत्तर पुराण में भी उल्लिखित है । रंगनाथ जी से भट्ट भास्कर नामक पुत्र हुआ ।

भट्ट भास्कर से दो पुत्र रत्न हुए –

१. गोपाल २. नारायण । ये ही हैं वे नारायण भट्ट गोस्वामी जो जनमानस के ब्रज मार्ग दर्शक हैं । ये सामान्य विभूति नहीं हैं, स्वयं कृष्ण पार्षद नारदावतार हैं । श्रीराधा रानी की प्रिय सखी श्रीरंगदेवी देवी जी का आवेश हैं । असामान्य थे तभी तो "श्रीब्रजभक्तिविलास" जैसे असामान्य ग्रन्थ की रचना कर डाली, इसका अध्ययन पर्याप्त है आपके व्यक्तित्व ज्ञान के लिए ।

सम्वत् १५८८ वैशाख शुक्ल पक्ष नरसिंह जयन्ती दिवाभाग को पावन किया आपके जन्म ने । द्वादश वर्ष की आयु में पितृव्य शंकर भट्ट जी से पाण्डित्य शिक्षा पूरी की । सम्वत् १६०२ में ब्रजागमन एवं गुरु ब्रह्मचारी जी के निकट रहकर उनसे सम्प्रदाय रहस्य की शिक्षा प्राप्त की । ब्रज तीर्थों का उद्धार कर सम्वत् १६०९ में 'श्रीब्रजभक्तिविलास' जैसे अनुपम ग्रन्थ की रचना की । सम्वत् १६१२ में 'ब्रजोत्सव चन्द्रिका' ग्रन्थ के जनक बने । सम्वत् १६२६ में आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को किशोरी श्रीराधा का प्राकट्य आप श्री के द्वारा हुआ । सम्वत् लगभग १७०० वामन जयन्ती के अवसर पर आपने धाम प्रवेश किया ।

श्रीनाभा जी के शब्दों में –

ब्रजभूमि उपासक भट्ट सो रचि पचि हरि एकै कियौ ॥
गोप्य स्थल मथुरा मण्डल जिते वाराह बखाने ।
ते किये नारायण प्रगट प्रसिद्ध पृथ्वी में जाने ॥
भक्तिसुधा कौ सिन्धु सदा सतसंग समाजन ।
परम रसज्ञ अनन्य कृष्णलीला कौ भाजन ॥
ज्ञान स्मारत पच्छ कौं नाहिन कोउ खण्डन बियौ ।
ब्रजभूमि उपासक भट्ट सो रचि पचि हरि एकै कियौ ॥

अर्थात् – ब्रह्मा की सृष्टि से बाहर बड़े श्रम से बनाया बनवारी ने इस व्यक्तित्व को । वाराह पुराण में वाराह प्रभु व भू देवी के सम्वाद में उल्लिखित तत् समस्त लीला स्थलियों का प्राकट्य किया श्री नारायण भट्ट जी ने ।

प्राकट्य-विधि

लीला भूमि में आराधना पूर्वक निवास करने पर स्वयं लीला बिहारी ही आकर तत्तीर्थों (विग्रह, सर, वन) का साक्षात्कार कराते, तब भट्ट जी उस स्थल पर निर्मल बालकों द्वारा तल्लीला का अभिनय कराते । एक समय माघ मास के अवसर पर कुछ यात्री गण त्रिवेणी स्नान को जा रहे थे उन्हें देखकर नारायण भट्ट जी ने तुरन्त ही कहा –

भट्ट जी – "आप लोग ब्रज त्रिवेणी को त्याग कर अन्यत्र क्यों जा रहे हैं?"

"ब्रज में भला त्रिवेणी कहाँ !!" यात्रियों ने चकित हो पूछा ।

भट्ट जी – "श्री ऊँचे गाँव में" ।

श्री भट्ट जी सभी यात्रियों को ऊँचे गाँव में लाये एवं भूमि खनन कर त्रिवेणी की तीनों धाराओं का दर्शन कराया ।

त्रिवेणी – "भट्ट जी ! श्रीहरि ने आहूत कर राधा-श्याम कुण्ड में जब से मुझे वास दिया, उसके पश्चात् मैं ब्रज छोड़कर पुनः गई ही नहीं । तब से मेरा प्रवास ब्रज ही बन गया है ।"

एक बार तो ऐसी ब्रज महिमा गाई भट्ट जी ने कि स्वयं प्रयागराज को भी नत कर दिया ।

एक बार गोदावरी में स्नान करते समय युगल ने अपना दर्शन कराया एवं निर्देश दिया ।

युगल सरकार – "भट्ट जी ! अति शीघ्र ब्रज प्रस्थान कर अब आप हमारी लीला स्थलियों को प्रकाशित करो (लाड़िलेय नामक विग्रह देते हुए) यह लो मेरा बाल स्वरूप, यह तुम्हें ब्रज लीला रहस्यों का बोध करायेगा ।"

युगलाज्ञा से आपने तुरन्त ही ब्रज की ओर प्रस्थान कर दिया । श्री गोवर्द्धन पहुँचते-पहुँचते ढाई वर्ष हो गए । उस समय सनातन गोस्वामी के श्री मदनमोहन यहीं थे । सनातन जी एवं कृष्णदास जी ब्रह्मचारी सेवायत थे । राजभोग के दर्शन करके अभी शयन ही किया था कि भट्ट जी पहुँच गए मन्दिर में, आपके पहुँचते ही स्वतः द्वार खुल गया । श्रीप्रभु ने मस्तक पर वरद हस्त रखते हुए उन्हें युगल मन्त्र का उपदेश किया एवं श्रीराधिका रानी ने प्रेम लक्षणा भक्ति प्रदान की । वार्ता के इसी बीच श्रीसनातन जी व श्रीकृष्ण दास जी ब्रह्मचारी की निद्रा टूटी तो देखा – भक्त-भगवान् का प्रत्यक्ष मिलन हो रहा है । प्रभु ने आदेश दिया श्रीकृष्ण दास जी को कि आप नारायण भट्ट जी को सम्प्रदाय-सिद्धांतोपदेश दें तब श्रीकृष्ण दास जी द्वारा आपको सम्प्रदाय-सिद्धांतोपदेश प्राप्त हुआ । लीला स्थलों के प्रकटीकरण में ब्रजवासियों का भी सहयोग मिलने लगा । दिल्लीश्वर बादशाह अकबर ने आपके भजन-सेवा से प्रभावित होकर अपने कोषाध्यक्ष (टोडरमल) को सेवार्थ भेजा ।

टोडरमल – "महाभाग ! कोई सेवा बताएँ ।"

नारायण भट्ट जी – "यदि विशेष इच्छा है सेवा की तो ब्रज के जिन-जिन तीर्थों का प्राकट्य हो चुका है, उन्हें स्वरूपानुरूप सुसज्जित, सुरक्षित करें ।" आदेशानुसार टोडरमल ने तीर्थ स्थलों में सुन्दर निर्माण कार्य कराया ।

श्री बरसाना गाँव में "श्रीराधारानी" एवं ऊंचा गाँव में "श्रीदाऊ जी" आपके प्रकटित विग्रहों में अति प्रसिद्ध एवं प्रपूज्य हैं । इन दो सेव्य विग्रहों की सेवा पूजा आप स्वयं ही करते थे ।

अनन्तर पिता के आग्रह पर आपने विवाह कर श्री दामोदर नामक पुत्र को जन्म दिया । तत्कालीन वैष्णव समाज ने आपको ब्रजाचार्य पद पर अभिषिक्त किया । ब्रज में स्थान-स्थान पर रासादि लीलानुकरण भी आपने बहुत कराया । बारह वर्ष तक श्रीराधा कुण्ड पर वास किया, पश्चात् शेष जीवन ऊँचे गाँव में व्यतीत किया ।

भट्टजी द्वारा प्रकटित प्रधान तीर्थ – गोवर्द्धन में मानसी गंगा .....(ब्रज भक्ति विलास में देखें पृष्ठ - २)

भट्टजी की कृति – (१) ब्रजभक्ति विलास (२) ब्रज दीपिका (३) ब्रजोत्सव चन्द्रिका (४) ब्रज महोदधि

(५) ब्रजोत्सव ह्लादिनी (६) बृहद् ब्रज गुणोत्सव (खेद है, अथक् प्रयास के बाद भी २६,००० श्लोकों वाला यह दिव्य सद्ग्रन्थ 'बृहद् ब्रज गुणोत्सव' उपलब्ध न हो सका । ब्रज की समस्त ग्रामटिकाओं का इतिहास संजोये निश्चित ही यह ग्रन्थ असमोर्ध्व है । वैष्णव जगत पर परमोपकार करने के निमित्त यदि कोई महाभाग एक बार भी ग्रन्थ का दर्शन करा दे तो संस्था द्वारा उचित पुरस्कार देने की घोषणा है । साथ ही उस परमोदार व्यक्ति का नाम रत्न-जटित लेख में प्रकाशित हो अमर हो जाएगा । भगवद्-प्रियता की प्राप्ति में तो संदेह ही कैसा ?)

(७) ब्रज प्रकाश; ये सात ग्रन्थ राधा कुण्ड में मदनमोहन प्रभु व गुरु श्रीकृष्ण दास जी ब्रह्मचारी के सानिध्य में ही लिखे । ऊँचे गाँव में रहते समय ५२ ग्रंथों का निर्माण किया ।

संकेत वट में स्वयं श्रीराधा रमण लाल ने भागवत पर टीका करने की आज्ञा दी तब –

'रसिकाह्लादिनी' टीका का निर्माण हुआ । भट्ट जी द्वारा रचित 'प्रेमांकुर नाटक' ग्रन्थ में दान, मान, मगरोकनी, नोक-झोंक, भाण्ड फोड़नी, निकुंज रचना, निकुंज भेद एवं चिकसोली बरसाना में तेरस के दिन जो मटकी फोड़ लीला (बूढ़ी

लीला) होती है वह भी इसी ग्रन्थ के आधार पर है । सम्प्रति 'प्रेमांकुर नाटक' एवं 'बृहद् ब्रज गुणोत्सव' ये दोनों दिव्य ग्रन्थ अनुपलब्ध हैं । भट्ट जी द्वारा प्रकटित प्रधान विग्रह बरसाने में श्री लाड़ली जी, ऊँचे ग्राम में श्री दाऊ जी, खायरा में श्री गोपीनाथ जी, संकेत में संकेत देवी व राधा रमण जी, शेषशायी में पौढा नाथ, दाऊ जी में बलदेव जी, पैंठा में चतुर्भुज जी, मथुरा में महा-विद्या, दीर्घ विष्णु, महाविष्णु एवं वाराह भगवान्, आदिबद्री जी, कामेश्वरमहादेवादिक । आपके नित्य संगी श्री लाड़िलेय प्रभु वर्तमान में अलवर रियासत के अन्तर्गत नीमराना नामक स्थान पर विराजमान हैं जिनकी सेवा भट्ट जी के घराने की शिष्य परम्परा द्वारा जारी है ।

श्रीभट्टजी की गुरु-परम्परा

श्रीमच्चैतन्यदेव के पार्षद श्रीगदाधर पंडित, उनके शिष्य श्रीकृष्णदास ब्रह्मचारी जी एवं ब्रह्मचारीजी के ही शिष्य हैं श्रीनारायणभट्ट गोस्वामी । भक्तमाल टीकाकार प्रियादासजी कहते हैं –

गोसांई सनातन जू मदनमोहन रूप माथे पधराय कही सेवा नीकी कीजिये,
जानौ कृष्णदास ब्रह्मचारी अधिकारी भये भट्ट श्री नारायण जू शिष्य किये रीझिये ।

युगल सरकार की उपासना ही आपके सम्प्रदाय में प्रधान है । ब्रज के लुप्त-गुप्त लीला स्थलों के प्रकाशन रूपी उपकार का समस्त वैष्णव समूह सदैव आभारी रहेगा ।

श्रीराधाकृपाकटाक्ष स्तोत्र

बाबाश्री द्वारा पद 'करुणामयी पुकार सुनो... (२१/७/२००६)' के गायन में हुए स्तोत्र-भावार्थ से संकलित

मुनीन्द्रवृन्दवन्दिते त्रिलोकशोकहारिणी, प्रसन्नवक्त्रपंकजे निकुंजभूविलासिनी ।
व्रजेन्द्रभानुनन्दिनी व्रजेन्द्रसूनुसंगते, कदाकरिष्यसीह मां कृपा कटाक्ष भाजनम् ॥१॥

श्रेष्ठ मुनियों के ईश्वर भी आपकी वन्दना करते हैं । आप त्रिलोकी के शोकों का हरण करने वाली हैं । आप त्रिलोकी के समस्त शोकों को हरण करने की शक्ति रखती हैं । आपका नाम राधा है । आप सदा प्रसन्न मुख वाली हैं क्योंकि आपका नित्य सान्निध्य श्रीकृष्ण से है । आप बड़ी सरल हैं । आप वृन्दावन की निकुंजों की पृथ्वी पर ही शयन करती हैं । व्रज के प्रतापी महाराज वृषभानुजी, जो व्रजेन्द्र हैं, वृषभानुराय जिनका नाम है, आप उनकी कन्या हैं । इस रूप में आपने अवतार लिया है । उधर नन्दराय के घर में गोलोकेश्वर हैं, दोनों ही एक साथ आये हैं । आप कृपा कब करेंगी ? कब आप अपने कृपा कटाक्ष का पात्र मुझे बनायेंगी ?

अशोकवृक्षवल्लरी वितानमण्डपस्थिते, प्रवालज्वालपल्लव प्रभारुणाङ्घ्रिकोमले ।
वराभयस्फुरत्करे प्रभूतसम्पदालये, कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥२॥

उस वृक्ष का नाम ही है अशोक, जहाँ शोक नहीं है । आपकी शरण में आने पर शोक नहीं है । अशोक वृक्ष की लताओं के चन्दोवा या तम्बू में, उसका जो मण्डप है, उसमें आप विराज रही हैं । उस समय आपके चरणों की शोभा ऐसी है, जैसे नये-नये लाल कोमल पल्लव अथवा इतने अरुण जैसे अग्नि शिखा की ज्वाला तथा मूंगे की तरह आपके अरुण चरणकमल की लाल प्रभा निकुंज भूमि में फ़ैल रही है । कोई भी शरण में आ जाए, आपके सुन्दर करकमल उसको अभयदान देने के लिए फड़का करते हैं । आपकी निकुंजों में, आपके धाम में रसमयी अनन्त सम्पत्तियाँ भरी पड़ी हैं । आप कब मुझे अपने कृपा कटाक्ष का अधिकारी बनायेंगी ?

अनंगरंगमंगल प्रसंगभंगुरभ्रुवां, सुविभ्रमं ससम्भ्रमं दृगन्तबाणपातनैः ।
निरन्तरं वशीकृत प्रतीतनन्दनन्दने, कदाकरिष्यसीह मां कृपा कटाक्षभाजनम् ॥३॥

प्रेम के मिलन के मंगलमय प्रसंग के समय आपके कटाक्ष में टेढ़ी होती हुई जो भौंहें हैं, प्रेम के विभावों के (भावों सहित)

नेत्र के कोणों के बाणों से आश्चर्य उत्पन्न करते हुए जब आप कटाक्षों की वर्षा करती हैं, उस समय नन्दनन्दन जड़वत् आपके वश में हो जाते हैं, ऐसी आप मुझे कब अपने कृपा कटाक्ष का पात्र बनाओगी ?

तड़ित्सुवर्णचम्पक प्रदीप्तगौरविग्रहे, मुखप्रभापरास्तकोटि शारदेन्दुमण्डले ।
विचित्रचित्रसंचरच्चकोरशावलोचने, कदा करिष्यसीह मां कृपा कटाक्ष भाजनम् ॥४॥

आपके अंगों की कान्ति बिजली अथवा गलित स्वर्ण अथवा सुनहली चम्पा की तरह है, ऐसा गौर प्रकाशित आपका विग्रह है । जिस समय आप अपने मंच पर विराजती हैं, आपके मुख की प्रभा से करोड़ों शरत्पूर्णिमा के चन्द्रमा तिरस्कृत हो जाते हैं और विशेषकर उस मुखमण्डल में आपके सुन्दर चंचल नेत्र विचित्र प्रकार के चकोर शिशुओं की तरह जब चंचल गति से नृत्य करते हैं तो उसकी शोभा का क्या वर्णन है ? चकोर के शिशुओं के समान सुन्दर नेत्र वाली, आपकी दृष्टि से विचित्र प्रकार के चित्रों का संचार होता है, वह दृष्टि आप मुझ पर कब करेंगी ?

मदोन्मदातियौवने प्रमोद मानमण्डिते, प्रियानुरागरंजिते कलाविलासपण्डिते ।
अनन्यधन्यकुंजराज कामकेलिकोविदे, कदाकरिष्यसीह मां कृपा कटाक्ष भाजनम् ॥५॥

लीला के समय आपका कैशोर मद, अति उन्मद भाव से रूप गर्विता, यौवन गर्विता की तरह आप मान करती हैं, आपका मान आनन्द भरा है, जिससे श्रीकृष्ण को मनाने का अवसर मिलता है क्योंकि उनकी इच्छा रहती है कि मैं राधा की आराधना करूँ । इसीलिए आप उनकी इच्छा पूर्ण करने के लिए मान करती हैं । वह मान अत्यधिक प्रमोद भरा, आनन्द भरा होता है क्योंकि आप प्रिय के अनुराग से रंजित होकर मान करती हैं । यही उस विलासपूर्ण कला का पाण्डित्य है, अनन्त अनुराग, ऊपर से मान । उस मान को कोई नहीं देख सकता है । जो अनन्य प्रेम से युक्त धन्य सखियाँ हैं, वे ही उस प्रेम युक्त मान को समझ सकती हैं । उसी विशेष कुञ्ज, मान कुञ्ज में आप मान करती हैं । समस्त प्रेम की केलियाँ (लीलायें), जिनमें आप चतुर हैं । इसलिए ऐसा प्रमोद मान आप ही करती हैं । मुझे आप अपने कृपाकटाक्ष का पात्र कब बनाओगी ?

अशेषहावभाव धीर हीर हार भूषिते, प्रभूतशातकुम्भकुम्भ कुम्भिकुम्भसुस्तनी ।
प्रशस्तमंदहास्यचूर्णपूर्णसौख्यसागरे, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥६॥

प्रेम के सभी हाव-भावों से युक्त तथा धैर्य रूपी हीरों के हार से विभूषित, स्वर्ण कलशों के समान मनोहर पयोधरों वाली, प्रशंसनीय मन्द हास्य से भरी हुई जो प्रेम की सागर हैं, ऐसी श्रीराधा ! इसी जन्म में कब मुझे अपने कृपा कटाक्ष का पात्र बनायेंगी ?

मृणालबालवल्लरी तरंगरंगदोर्लते, लताग्रलास्यलोलनील लोचनावलोकने ।
ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञ मुग्ध मोहनाश्रये, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥७॥

जब आप चलती हैं तो आपकी भुजायें ऐसी शोभा पाती हैं जैसे कमल की नाल पानी में झकोरों के साथ लहराती है तथा जैसे हरी-नीली लताओं का अग्र भाग हवा से चंचल हो जाता है किन्तु उस चंचलता में उन लताओं की हरीतिमा-नीलिमा बड़ी सुन्दर लगती है, ऐसे ही आपके नेत्र हैं । ऐसा लगता है जैसे नीली लता नृत्य कर रही है, ऐसी आपके नेत्रों की शोभा है, आपके नेत्रों का अवलोकन ऐसा ही है । ऐसी छटा देखकर श्रीकृष्ण लाड़ में भर करके आपके सामने मिलन की कामना से पृथ्वी पर लुंठन करते हैं । उनके सुन्दर मुग्ध भावों का आश्रय स्थान आप ही तो हैं, उनकी उस लुंठन प्रक्रिया का लक्ष्य आप हैं । श्रीराधे ! आप मुझे अपने कृपा कटाक्ष का पात्र कब बनायेंगी ?

सुवर्णमालिकांचितेत्रिरेखकम्बुकण्ठगे, त्रिसूत्रमंगलीगुण त्रिरत्नदीप्तिदीधिति ।
सलोलनीलकुन्तले प्रसूनगुच्छगुम्फिते, कदाकरिष्यसीह मां कृपा कटाक्ष भाजनम् ॥८॥

आपके वक्षःस्थल पर स्वर्ण की माला है । आपके शंखाकार कण्ठ में तीन मंगलमयी रेखायें सुशोभित हैं । आपके कण्ठ में श्यामसुन्दर के सुहाग का प्रतीक तीन सूत्रों (लड़ों) वाला मंगलसूत्र शोभित हो रहा है । तीनों सूत्रों में शास्त्र विधि से

अलग-अलग तीन प्रकार के रत्न हैं । इन तीनों रत्नों की किरणें निकल रही हैं । आपके नीले (काले) चंचल केशपाश में फूलों के गुच्छे गुँथे हुए हैं । आप अपने कृपा कटाक्ष का पात्र मुझे कब बनायेंगी ?

नितम्बबिम्बलम्बमान पुष्पमेखलागुण, प्रशस्तरत्नकिंकिणी कलापमध्यमंजुले ।
करीन्द्रशुण्डदण्डिका वरोहसौभगोरुके, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥९॥

आपके कटितट में फूलों की कौंधनी सुशोभित है, उसके नीचे प्रशंसनीय रत्नों की सोलह लड़ियों की जाल युक्त एक और किंकिणी है । उन रत्न की किंकिणियों की जो लड़ियाँ (कलाप) हैं, उससे आपका पृष्ठ भाग सुशोभित है । गजराज की शुण्ड के दण्ड के समान सुन्दर आपका जघन प्रदेश है । ऐसी शोभा वाली श्रीराधे ! इसी जन्म में मुझे अपने कृपा कटाक्ष का पात्र आप कब बनाओगी ?

अनेकमन्त्रनादमंजु नूपुरारवस्खलत्, समाजराजहंसवंश निक्वणातिगौरवे ।
विलोलहेमवल्लरी विडम्बिचारुचंक्रमे, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१०॥

वेदों के समस्त मन्त्र आपके नूपुरों से निकला करते हैं । "श्रीराधा पदकमल ते नूपुर कलरव होय । निर्विकार व्यापक भयो शब्द ब्रह्म कहें सोय ॥" आपके नूपुरों से शब्द ब्रह्म की उत्पत्ति होती है और उससे अनेक प्रकार के मन्त्रों का उद्भव हुआ, उन नूपुरों का मीठा रव ऐसा है मानो राजहंसों का झुण्ड क्वणन कर रहा है; वह शब्द तब होता है, जब आप चलती हैं, उस समय ऐसा लगता है जैसे एक चंचल सुनहली लता चली जा रही है । सुनहली लता के अनुकरण के समान आपकी सुन्दर गति है । श्रीराधे ! इसी जन्म में आप मुझे अपने कृपा कटाक्ष का पात्र कब बनायेंगी ?

अनन्तकोटिविष्णुलोक नम्रपद्मजार्चिते, हिमाद्रिजा पुलोमजा विरंचिजावरप्रदे ।
अपारसिद्धिवृद्धिदिग्ध सत्पदांगुलीनखे, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥११॥

अनन्त कोटि विष्णुलोकों की लक्ष्मियाँ नम्र भाव से आपकी पूजा करती हैं तथा पार्वतीजी, इन्द्राणी और सरस्वतीजी को भी आप वरदान देने वाली हैं । आपके चरणकमलों की अँगुलियों में जो नख मणियाँ हैं, वे अनन्त सिद्धियों की वृद्धि से भीगी हुई हैं, ऐसी श्रीराधे ! इसी जन्म में आप मुझे अपने कृपा कटाक्ष का पात्र कब बनायेंगी ?

मखेश्वरी क्रियेश्वरी स्वधेश्वरी सुरेश्वरी, त्रिवेदभारतीश्वरी प्रमाणशासनेश्वरी ।
रमेश्वरी क्षमेश्वरी प्रमोदकाननेश्वरी, ब्रजेश्वरी ब्रजाधिपे श्रीराधिके नमोस्तुते ॥१२॥

ब्रह्मवैवर्त पुराण में वर्णन है कि सबसे पहले परमात्मा श्रीकृष्ण ने यज्ञों के द्वारा श्रीराधिका की आराधना की । उनके बाद महाराज सुयज्ञ ने आपकी आराधना की । उसके बाद पार्वतीजी ने यज्ञों द्वारा ९० दिनों का अनुष्ठान किया, जिस यज्ञ में सनत्कुमार पुरोहित थे । यह इतिहास है । इसीलिए आपको यज्ञों की ईश्वरी कहा गया है । स्वधा पितृ-गणों का भाग है, उसकी भी आप ईश्वरी हैं क्योंकि आपकी माँ महारानी कीर्ति पूर्व जन्म में पितृश्वरों की मानसी कन्या कलावती थीं । इसलिए आप स्वधा की भी ईश्वरी हैं । सुरेश्वरी अर्थात् स्वाहा की भी आप ईश्वरी हैं । ब्रह्मवैवर्त के अनुसार आपके ही अंगों से सरस्वती आदि का प्रादुर्भाव हुआ, इसलिए समस्त वेदों की ईश्वरी आप ही हैं । पञ्च देवियों का प्राकट्य आपसे हुआ, इसलिए समस्त शास्त्रों के प्रमाणों की ईश्वरी आप ही हैं । आप लक्ष्मी की ईश्वरी हैं । क्षमा पृथ्वी को कहते हैं, आप पृथ्वी की भी ईश्वरी हैं । चित्रकूट से थोड़ा आगे प्रमोद कानन है, वहाँ श्रीसीतारामजी ने विहार किया था, उसकी भी ईश्वरी आप हैं क्योंकि गर्ग संहिता के अनुसार जितनी भी स्वर्णमयी सीतायें थीं, वे सब महारास में आई हैं, आपके आनुगत्य में उन समस्त सीताओं को रास की प्राप्ति हुई, इसलिए उन प्रमोद काननों की ईश्वरी भी आप राधा ही हैं । ब्रज की ईश्वरी भी आप ही हैं, ब्रज में आपका ही आधिपत्य है, ऐसी श्रीराधिके ! आपको नमस्कार है ।

इतीदमद्भुतस्तवं निशाम्य भानुनन्दिनी, करोतु संततं जनं कृपाकटाक्षभाजनम् ।
भवेत्तदैव संचित त्रिरूपकर्मनाशनं, लभेत्तदाव्रजेन्द्रसूनु मण्डलप्रवेशनम् ॥१३॥

आशा जब मनुष्य भगवान् से इतर कहीं और करता है तो भगवान् से विमुख हो जाता है अर्थात् उसकी शरणागति नष्ट हो जाती है ।

यह अद्भुत स्तव है, इसमें राधारानी के माधुर्य और ऐश्वर्य का भी वर्णन है । जो प्रेम से इस स्तुति को करता है तो इसे सुनकर उस जन को, जो पुकार रहा है, उसको अनन्तकाल के लिए श्रीराधारानी अपने कृपाकटाक्ष का पात्र बनाती हैं, फिर वह कभी भी माया में नहीं जाता है । एक बार जब राधारानी की कृपा हो जाती है तो अनन्तकाल के लिए हो जाती है । इससे उसके अगणित जन्मों से इकट्ठा अनन्त कर्म राधारानी की कृपा से उसी समय नष्ट हो जाते हैं, उनका नाश हो जाता है, वे जल जाते हैं, इसलिए बन्धन का कोई प्रश्न ही नहीं रहता है । यह राधारानी की अद्भुत कृपा है । महादेवजी कहते हैं कि त्रिरूप – तीनों प्रकार के कर्म - संचित, प्रारब्ध और क्रियमाण जल जाते हैं । लोग कहते हैं कि प्रारब्ध नहीं जलता है । नहीं, श्रीजी की कृपा से प्रारब्ध भी जल जाता है, तीनों प्रकार के कर्म जल जाते हैं । उसके बाद भक्त दिव्य धाम में, श्रीकृष्ण के गोलोक में प्रवेश कर जाता है । इस श्लोक के अन्त में 'कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्' नहीं कहा गया है, जबकि इस स्तोत्र के हर श्लोक के अन्त में ऐसा कहा गया था । इसका कारण यह है कि इस स्तोत्र के प्रभाव से 'भक्त' अब श्रीकृष्ण के दिव्य धाम में प्रवेश कर गया, अब उस पर कृपा हो गयी, यही उस कृपा का फल था, जो वह दिव्य धाम में प्रवेश कर गया ।

श्रीराधिका की बाल-लीलाएँ

श्रीबाबामहाराज द्वारा अध्यापित 'लाड़सागर' का सरल भावार्थ

श्याम हू आधीन जाकैं छिनक तजत न लार । उच्च पद दरसाय मेटयौ सकल जग भ्रम जार ॥
नंद सुत वृषभानु तनया चरित किये प्रचार । वृन्दावन हित रूप को अस भजन रस दातार ॥

श्यामसुन्दर राधारानी के आधीन हैं, एक क्षण को भी उनका पास (संग) नहीं छोड़ते हैं । श्रीहितहरिवंशजी ने ऊँचा पद दिखाकर सारे संसार का भ्रम जाल मिटा दिया ।नन्दनन्दन और वृषभानुलली के चरित्र का उन्होंने प्रचार किया । वृन्दावनदासजी कहते हैं कि हितहरिवंश जी ऐसे भजनरस के दाता (देने वाले) थे ।

राग रामकली – पद - ३

'गाढ़ौ दही दै री माइ । भोर लागी भूख श्रीराधा कहति तुतराइ ॥'
'नींद बस कीरति जु अति लड़ि मचलि देति जगाइ । मोहि लैकैं अंक मैया भली वेगि जिमाइ ॥'
श्रीदामाँ जगिहै चपल तौ जाइगौ डहकाइ । चिबुक गहिकें कुवँरि ठिनकति उठि आलसहिं गँवाइ ॥
लली मुख के चाँदने नहिं प्रात जान्यौ जाइ । बहुत निसि यौं कहति रानी लेति अंक लगाइ ॥
बेटी चंद प्रकाश अबहीं उठी कहा वर्राइ । बंधु तें जिनि डरै प्याऊँ दही तोहि अघाइ ॥
चिरैयाँ चुहकति जु जननी सुनैं किन चितलाइ । बाबा सों कहिहौं खिजावति मोहि रात बताइ ॥
नींद अहुराई उठी रानी तबै अकुलाइ । नैन पूरित वारि चूँवति बदन पुनि पछताइ ॥
नीर मुख जु प्रछाल लाई दही सिता मिलाइ । लाड़ भींजति हिये अपने कर जु पान कराइ ॥
बहुरि मठरी रस पगी दई हांथ कुँवरि गहाइ । अजिर खेलौ बैठि जननी भूरि लेति बलाइ ॥
नूपुरनि धुनि होति मृदु मृदु चरन धरति उठाइ । शोभा कौ विरवा मनौं यह पवन झोका खाइ ॥
भान घरनी ओट ह्वैकैं निरखि परम सिहाइ । वृन्दावन हित रूप जैसें रंक थाती पाइ ॥

भावार्थ – लाली राधा कहती हैं – हे मैया ! मुझे गाढ़ा दही दे । सुबह के समय राधारानी तुतलाकर कहती हैं – मैया ! मुझे भूख लगी है । कीर्ति मैया नींद के आधीन हैं और उस समय अति प्यारी (राधा) मचल कर उन्हें जगा देती हैं । मैया ! मुझे गोद में ले ले और अच्छी प्रकार से खिला । श्रीदामा बड़ा चंचल है, वह जग जाएगा तो यहाँ आकर विघ्न

करेगा । राधारानी मैया की ठोड़ी पकड़कर बहुत मचलती हैं और कहती हैं – 'उठ जा, आलस्य में समय बीता जाता है ।' राधारानी के मुख के सामने सबेरा नहीं जाना जाता । (सुबह का पता नहीं पड़ता) कीर्तिरानी राधा से कहती हैं कि अभी तो बहुत रात है । वे अपनी लाड़ली को गोद से लगाकर कहती हैं – 'सो जा ।' बेटी ! अभी तू चन्द्रमा के प्रकाश में ही बर्राकर उठ गयी है और बोल रही है । भाई से मत डर कि वह छीन लेगा । मैं अभी तुझे पेट भरकर दही पिलाती हूँ । चिड़ियाँ बोलने लगी हैं, उनके चहकने के कारण मैया चित्त लगा कर कैसे सुनेगी ? राधारानी कहती हैं – 'मैं बाबा से कहूँगी कि रात बताकर मैया मुझे खिजाती है ।' कीर्ति मैया विकल होकर नींद से उठ बैठती हैं । उनकी आँखों में प्रेम के आँसू भरे हैं । वे अपनी बेटी का मुख चूमती हैं और फिर पछताती हैं । पानी से अपने मुख को धोकर वे मिस्री मिलाकर दही लाती हैं । कीर्ति मैया हृदय में प्रेम से भरकर लाली को अपने हाथ से दही खिलाती हैं । रस से भरी हुई मठरी लाली के हाथ में पकड़ा देती हैं । मैया अपनी लाली की बहुत अधिक बलैया लेकर कहती हैं कि आँगन में ही खेलो । राधारानी धीरे-धीरे अपने कोमल चरणों को उठाकर रख रही हैं, उससे नूपुरों की मधुर ध्वनि उत्पन्न हो रही है । ऐसा प्रतीत होता है, मानो शोभा का वृक्ष हवा का झोंका खाकर हिल रहा है । कीर्ति मैया ओट होकर अपनी लाली की शोभा को देखकर आनन्द में भर जाती हैं । श्रीवृन्दावनदासजी कहते हैं कि कीर्ति मैया की स्थिति ऐसी हो गयी है, जैसे - किसी अत्यन्त दरिद्र को बहुत-सा धन मिल गया हो ।

राग रामकली – पद ४

मैया घैया काढ़ि पिवाइ । खिरक तें बाबा जु लाये अबहि गाइ दुहाइ ॥
करन दैउँ न काम घर कौ कहा बकावति मोहि । रई गहि ठाढ़ी भई देउँ न विलोवन तोहि ॥
अरी राधा भली बेटी तनिक धरि मन धीर । उठत माँखन मागि है श्रीदाम तेरौ वीर ॥
मचलि माँगन की जु शोभा निरखि कीरति नैन । प्रेम कीनी घावरी मुखतें न निसरत बैन ॥
गहे अंचल कहति अतिलड़ि देह मैया देह । बहुरि भैया जागिहै धमतूर माँचै ग्रेह ॥
कटोरा लुढ़काइ दैहै लै भजैगो कौर । तूं जु हर हर हँसैगी चलि है न बल कछु और ॥
अरी बेटी बहिन भैया मिलि जिमाऊँ साथ । बहुत घैया काढि प्याऊँ आपनें ही हाथ ॥
छाड़ि दै कर रई अब मोहि करन दै घर काज । वृन्दावन हित रूप तौ लौं खेलि सखिनु समाज ॥

भावार्थ – अधचले दही को जब मथा जाता है तो उसे घैया कहते हैं । जब दही को पूरी तरह मथा जाता है, तब उसे माखन कहते हैं । राधारानी कहती हैं – मैया ! मुझे घैया काढ़कर पिला । खिरक से बाबा अभी गाय दुहाकर लाये हैं । मैं तुझे घर का काम नहीं करने दूँगी, तू मुझे मूर्ख बना रही है । राधारानी रई को पकड़कर खड़ी हो गयीं और मैया से कहती हैं कि मैं तुझे दही बिलोने नहीं दूँगी । मैया कहती हैं – 'अरी राधा ! तू तो अच्छी बेटी है । अपने मन में थोड़ा धीरज रख । अभी तेरा भइया श्रीदामा उठकर माखन माँगेगा ।' कीर्ति मैया अपनी आँखों से राधारानी द्वारा मचलकर माँगने की शोभा को देखती हैं । राधारानी ने मैया को प्रेम से पागल कर दिया है । उनके मुख से आवाज नहीं निकल रही है । अत्यन्त लाड़ली राधा कीर्ति मैया का आँचल पकड़कर कहती हैं – 'मैया ! मुझे घैया दे । भइया श्रीदामा जागेगा तो घर में आधा झगड़ा मच जाएगा । वह तेरा कटोरा लुढ़का देगा और कौर लेकर भाग जायेगा । तू उस समय केवल हँसेगी और तेरा बल कुछ नहीं चलेगा ।' रानी कीर्तिजी कहती हैं – अरी बेटी ! मैं तुम दोनों भाई-बहन को साथ बैठाकर दही-माखन खिलाऊँगी । मैं बहुत-सा घैया काढ़कर तुझे अपने ही हाथ से पिलाऊँगी । तू मेरी रई को छोड़ दे और मुझे घर का काम करने दे । वृन्दावनदासजी कहते हैं कि कीर्ति मैया राधारानी से कहती हैं कि जब तक मैं तेरे लिए घैया काढ़ूँ, तब तक तू अपनी सखियों के साथ खेल ले ।

जिसमें अहम् नहीं है, वह यदि सारे संसार की हत्या कर दे, तब भी उसको पाप नहीं लगेगा । (गीताजी १८/१७)

अनुपम करुणाशीलिनी 'श्रीकिशोरीजू'

नारदजी ने अपने भक्ति सूत्र में लिखा है कि महत्कृपा (महापुरुषों की कृपा) के बिना किसी की भी यात्रा पूर्ण नहीं हो सकती है । इसीलिए श्रीजी की सहचरियाँ कलियुग में आचार्य के रूप में आयीं और जीवों से, हम लोगों से कहती हैं – **'चलहु चलहु चलिए निज देश ।'** निज देश तो वही है, सब वहीं चलो । इस संसार की आसक्ति छोड़ दो । निज देश कहाँ है ? वह अपना देश, निज घर कहाँ है ? **'रंग रंगीले जुग नरेश जहाँ दिव्य कनकमय'** दोनों राधा माधव को इस पद में नरेश (राजा) कहा गया है । यहाँ नरेश का अर्थ नर के ईश मनुष्यों का राजा नहीं है । ऐसा गलत अर्थ नहीं करना चाहिए । नृ - नञ् धातु से 'नर' शब्द बना है । इसीलिए इन पदों का अर्थ हर व्यक्ति नहीं कर सकता है । साधारण व्यक्ति तो नरेश का अर्थ राजा ही कहेगा किन्तु यहाँ इस पद में नरों के ईश यह अर्थ नहीं है । नृ-'नञ्' धातु से नर शब्द बना है । जो अपने विषय में नञ् अर्थात् न्याय कर सकता है, उसको नर कहा गया है । अपने विषय में न्याय करना क्या है, वह है एकमात्र प्रभु की शरण में चलना । इसलिए नरेश का अर्थ हुआ भक्तों के स्वामी । जो अपने बारे में न्याय कर रहा है कि हाँ, राधारानी का आश्रय ही सत्य है, बाकी सब असत्य है । ऐसे भक्तों के स्वामी हैं – राधामाधव, 'रंग-रंगीले' का यह अर्थ हुआ । अधिकतर लोग नरेश का अर्थ 'राजा' बता देते हैं, वह भाव-विरुद्ध अर्थ है ।

'रंग रंगीले जुग नरेश जहाँ दिव्य कनकमय, अवनि अखण्डित मणि मण्डित तहाँ करैं प्रवेस ॥'

उस दिव्य धाम में चलो, जहाँ की भूमि दिव्य स्वर्ण से मढ़ी हुई है । वह संसारी सोना नहीं है, जो बड़ा कठोर होता है, जिसमें कलियुग का वास होता है । इसके लिए तो लोग मर जाते हैं । इसके स्पर्श से कलियुग आता है । इसलिए उस धाम में दिव्य कनक है, जिसके स्पर्श से लाल-ललना की प्रीति मिल जाती है, ऐसा दिव्य वहाँ का कनक है । वह धाम जहाँ की पृथ्वी दिव्य कनकमयी है । अखण्डित अर्थात् महाप्रलय में भी उस धाम का नाश नहीं होता है । इस संसार का, इस पृथ्वी का तो नाश हो जाता है किन्तु उस अखण्डित अवनि – दिव्य धाम का कभी नाश नहीं होता है । वह धाम कोमल मणियों से मण्डित है । वहाँ प्रवेश करो । वहाँ चलो, चलो । 'चलहु चलहु चलिए निज देश ।' अर्थात् इस संसार की आसक्ति छोड़ दो । आचार्य सखी रूप हैं, वे कहते हैं कि हम राधारानी की आज्ञा से आये हैं, अपने आप नहीं आये हैं । राधारानी ने आज्ञा क्यों दिया ? उनको तुमसे कोई स्वार्थ नहीं है । एकमात्र करुणा ही उनको लाती है । करुणा के कारण ही वे अवतार लेती हैं और करुणा के कारण ही राधारानी ने हमको आदेश दिया – जाओ, संसारी जीवों को रास्ता दिखाओ । **'करुणानिधि श्रीनित्य किसोरी करि अनुकम्प कियो आदेस ।'**

उन्होंने अनुकम्पा किया करुणा करके । अनुकम्पा और करुणा में क्या अन्तर है ? ये भी समझना चाहिये । करुणा के बाद श्रीजी का हृदय काँप गया, बहुत द्रवित हो गया, उसे अनुकम्पा कहते हैं । करुणा के बाद राधारानी रह नहीं पायीं और अनुकम्पा के बाद आदेश दिया – अच्छा सखियो ! आप लोग जाओ ।

'आयीं अग्रवर्ति अलबेली धरि बर इच्छा विग्रह वेस ॥'

अग्रवर्ती माने 'यूथेश्वरी' वे आयीं । ये आचार्य ही प्रकट होते हैं इच्छा-विग्रह से । 'इच्छा-विग्रह' का अभिप्राय यह है कि जैसे हम लोगों का शरीर काल-कर्म के आधीन है, ऐसा आचार्यों का नहीं होता है । वे भगवदिच्छा से आते हैं, जैसे - रामायण में कहा गया है – 'निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ।' माया से, इन्द्रियों से परे वह विग्रह है, निज इच्छामय है । ऐसा शरीर श्रीजी की सखियों ने आचार्यों के रूप में धारण किया और उन्होंने कहा – जीवो ! चलो, धाम में चलें । **'ऐसो अवसर बहुरि न अइहै और निबाहू संग सुदेस ।'** यह मनुष्य शरीर बार-बार नहीं मिलेगा । हम तुम्हारा निर्वाह करेंगे, इसलिए चलो, संग चलो । 'सुदेस' - हम तुम्हारा अच्छी तरह निर्वाह करेंगे । वहाँ जाने का रास्ता क्या है ? **'नेम प्रेम ते परे पंथ तहाँ तुरत पहुँचिहै अलि अकलेस ॥'** वह रास्ता नेम और प्रेम से आगे है । कुछ लोग नेम का अर्थ करते हैं – साधन भक्ति और प्रेम का तात्पर्य है सिद्धा भक्ति से आगे परा – रस भक्ति । वे लोग जो भी अर्थ करते हैं, अपने भाव से करते हैं । नेम माने भी भक्ति करोगे और प्रेम माने भी भक्ति करोगे तो पुनरुक्ति दोष होगा । पुनरुक्ति कहते

हैं – एक ही बात को दो बार कहना । सूरदासजी ने इसका अर्थ किया है, नेम माने जितनी भी वैदिक विधायें हैं, वैदिक विधियाँ हैं और प्रेम माने भक्ति । इन दोनों से आगे है परा भक्ति, राधारानी की जो भक्ति है । 'नेम प्रेम ते परे पंथ तहाँ' वैदिक विधाओं से, ऐश्वर्य भक्ति से आगे जो 'मधुरा भक्ति' है । 'अकलेश' – इस शब्द का बड़ा गम्भीर अर्थ है । चित्त की जितनी भी क्लिष्ट वृत्तियाँ हैं, वे जब चली जायेंगी, तब तुरन्त पहुँच जाओगे । चित्त की वृत्तियों से क्लेश उत्पन्न होता है । बहुत से लोग इसको समझने को फ़ालतू बात समझते हैं । अरे, रस कैसे पैदा हो जाएगा ? जब हमारे हृदय में विष भरा हुआ है; तो क्लेश-रहित होने के बाद ही, जिसे श्रीरूपगोस्वामीजी ने अनर्थ-निवृत्ति कहा है, अनर्थ की निवृत्ति के बाद 'रस' उत्पन्न होगा । इसलिए इन शब्दों पर ध्यान देना चाहिए । वह पराभक्ति का मार्ग क्या है ? अपने स्वरूप के बारे में सोचो कि हम सोलह श्रृंगार करके सखी रूप में श्रीजी की सेवा में जा रहे हैं । 'मज्जनादि नव सत अभरन तन' – नौ और सात मिलकरके सोलह हुए । 'नव-सत' का अर्थ हुआ सोलह । सोलह श्रृंगार के ये अंग हैं – अङ्ग शुचि मज्जन वसन माँग महावर केश तिलक भाल तिल चिबुक में, भूषण मेंहदी वेष मिस्सी काजल अरगजा बीरी अंग सुगन्ध । वसन वस्त्र में सभी दिव्य वस्त्र जैसे साड़ी, चोली आदि । केश में माँग सजाना, केशों की वेणी गूँथना । ललाट के ऊपर तिलक, चिबुक में तिल, सभी अंगों में आभूषण, मेंहदी, मिस्सी, काजल, अरगजा, बीरी, सुगन्ध (इत्र), पुष्प (कली) टब नव सत साज सुरंग । ये सोलह श्रृंगार हैं, इनसे सजाया हुआ अपना रूप समझो । श्रीजी की सेवा में जाना है तो ऐसा भाव करो ।

'मज्जनादि नव सत अभरन तन सजिये मन रंजन सुभ वेस ।
विविध सुगंधनि अंग अंगनि में करहु अलंकृत कुसुम सुकेस ॥
सब जन भये अनुकूल अयन के, भय न रह्यो अब तनकहु सेस ।'

चाहे यहाँ के भक्त हैं चाहे नित्य धाम की सखियाँ हैं, वे सभी अनुकूल हैं । तुम यह सोचकर मत डरो कि हम नये स्थान में जा रहे हैं तो वहाँ क्या होगा ? जब जीव का शरीर छूटता है तो उसके सामने चार प्रकार के भय आते हैं -विश्लेषज भय, अनुतापज भय, मोहज भय, आगामी संदर्शज भय । सूक्ष्म शरीर जब स्थूल शरीर से अलग होता है तो अलग होने का भय रहता है, उसको विश्लेषज भय कहते हैं । हाय हम कुछ नहीं कर पाए, भगवान् से मिल नहीं पाए, अपने कर्म पश्चात्ताप बनकर आते हैं, उसका भी भय रहता है, इसे अनुतापज भय कहते हैं । तीसरा मोहज भय है – मेरी स्त्री बिछुड रही है या पति बिछुड रहा है, बेटा-बेटी बिछुड रहे हैं । आगामी संदर्शज भय है – आगे हम कहाँ जा रहे हैं, यह चौथा भय रहता है । इस प्रकार से ये चार प्रकार के भय रहते हैं । सखी रूपा आचार्य जीव से कहते हैं कि तुम्हारे सभी प्रकार के भय चले गये, विश्वास रखो । ये चारों प्रकार के भय कैसे नहीं रहते, यह भी एक लम्बा विषय है । विश्लेषज या संश्लेषज भय तो इसलिए नहीं रहता क्योंकि उसका सूक्ष्म शरीर परिपक्व होकर सखी रूप बन गया है । इसी तरह समझ लेना चाहिए कि कोई भय नहीं रहता है । अच्छा शकुन बन गया है । शकुन क्या है ? भागवत में उल्लेख है कि यह कैसे पता पड़े कि कोई मनुष्य भगवान् के धाम में जाने वाला है ? इसका एक चिह्न है । जो भगवान् के धाम में जाने वाला है जैसे आपको टिकट मिल गया है तो आप रेलगाड़ी में बैठ सकते हो । वैसे ही भागवत के अनुसार –

पुंसो भवेद् यर्हि संसरणापवर्गस्त्वय्यब्जनाभ सदुपासनया मतिः स्यात् ॥ **(श्रीभागवतजी १०/४०/२८)**

संसार से छूटने का लाइसेंस मिला, यह कैसे पता पड़ेगा ? उस मनुष्य को सन्त मिलते हैं । उनके पास वह उपासना सीखता है । इससे उसकी बुद्धि कृष्णमयी हो जाती है । इससे ही समझ लो कि वह भगवान् के पास पहुँच गया । त्वय्यब्जनाभ सदुपासनया मतिः – एक ही शब्द है किन्तु बड़ा गहरा है – सदुपासनया – सन्त मिल गये, उपासना मिल गयी, बुद्धि उपासनामयी हो गयी, बस समझ लो कि वह पहुँच गया । इसलिए शकुन मिल गया है ।

'सकुन समागम अगम जनावत प्रतिकूलिन के गये लवलेस ॥'

पचासों प्रतिकूल भाव होते हैं । दस नामापराध हैं, छः भक्तापराध हैं, तैंतीस सेवापराध हैं; ये सब प्रतिकूल भाव हैं । ये समझ लो कि तुम्हारे सभी प्रतिकूल भाव भी नष्ट हो गये । जिसको सत्संग मिल गया, सन्ताश्रय मिल गया, उसके पास

रहने मात्र से ही सारे प्रतिकूल भाव नष्ट हो जाते हैं । प्रतिकूल भाव कामादि तो बहुत छोटे हैं । भक्तापराध आदि इनसे बड़े हैं । भागवत के अनुसार प्रतिकूल भाव चले जाने का एक ही रास्ता है ।

कांश्चिन्ममानुध्यानेन नामसङ्कीर्तनादिभिः । योगेश्वरानुवृत्त्या वा हन्यादशुभदाञ्छनैः ॥ (श्रीभागवतजी ११/२८/४०)

निरन्तर श्रीजी का ध्यान रहे, नामसंकीर्तन आदि साधन और महापुरुष का संग – ये तीन चीजें जहाँ हैं, वहाँ प्रतिकूल भाव नष्ट हो जाता है । ये तीनों चीजें मिलती नहीं हैं । अपनी श्रद्धा - अपने इष्ट का ध्यान पहली चीज, दूसरी चीज है निरन्तर भगवच्चर्चा, नामकीर्तन, गुण-कीर्तन और तीसरी चीज है महापुरुष का संग, वह बड़ा कठिन है । साधु के वेष में इन्द्रिय-लोलुप लोग तो बहुत हैं किन्तु वास्तव में कृष्णमति वाला सन्त तो अलग ही होता है । हम लोग तो धन के, काम-क्रोध-लोभ आदि के दास हैं । अगर भागवत में वर्णित उपरोक्त तीन चीजें मिल गयीं तो सभी अशुभ नष्ट हो जायेंगे । इसीलिए तो महावाणीकार ने कहा – **'प्रतिकूलन के गये लवलेस ।'** अब तुम यह भय मत करो कि नये धाम में जा रहे हैं तो वहाँ क्या होगा ? इस संसार में तो घर में आते ही पत्नी चाय बनाने लग जाती है, बेटा कहता है कि पिताजी ! पानी पी लो किन्तु उस नई जगह में, नये धाम में क्या होगा ? वहाँ तो कोई पहचान नहीं है । आचार्य कहते हैं – मूर्ख, यह सब मत सोच । वहाँ तो सब सखियाँ प्रसन्न होती हैं । **'सुफल फली मन रली सबनि की'** नित्य धाम में सब सहचरियाँ प्रसन्न हो जायेंगी कि भवसागर से छूटकर यह नई सहचरी आई है । संसार में एक साधु दूसरे साधु से चिढ़ता है । गोपाल दास कहता है कि रामदास मूर्ख है, रामदास ने कहा कि इसे चीमटे से मारो । ऐसा वातावरण नित्य धाम में नहीं है । इसलिए कहा – **'सुफल फली मन रली सबनि की, जागे निज-निज भाग बिसेस ।'** नित्य धाम की सखियाँ सोचती हैं कि ये नई सहचरी आई है, इसके विशेष भाग्य जाग गये और इसका भी तो भाग्य जगा ही है । इसलिए परिणाम क्या हुआ ?

'हिलिमिलि हुलसि हियें हर्षहु अहु निरखहु श्रीहरिप्रिया परेस ॥'

सब सहचरियाँ कहती हैं कि यहाँ हर्ष ही है । एक साथ मिलकर विलास करो । ऐसा नहीं है जैसे कि मेरे गुरुदेव कहते थे कि चार मेंढकों को तराजू में रखकर तौलना बहुत कठिन होता है । एक मेंढक को तराजू पर रखोगे और दूसरे को लेने जाओगे तब तक पहले वाला कूदकर भाग जाएगा । तीसरे मेंढक को देखोगे, तब तक दूसरा उछलकर भाग जाएगा । उसी प्रकार साधुओं का समुदाय होता है । रसिकाचार्य श्रीविहारिनदेवजी ने भी लिखा है – 'बैरागी भटकत फिरें, लिए बैर और आग ।' बैरागी का मतलब कि जहाँ बैर और आग होते हैं, उसे बैरागी कहते हैं । गृहस्थियों से ज्यादा वैर 'बैरागियों' में होता है; ऐसी स्थिति नित्य धाम में नहीं है, वहाँ तो सब सहचरियाँ मिलकर, हर्षित होकर रहती हैं ।

श्रीबरसाने में नित्य श्यामसखी

'श्रीराधा पद पद्म रस पगी रसीली भूमि । प्रणवऊँ श्रीवृषभानुपुर लता लूम रही झूमि ॥'

बरसाने की भूमि का एक-एक कण श्रीकिशोरीजी के चरणकमलों के रस से सींचा गया है । 'श्रीराधा पद पद्म रस' – पद पद्म माने चरण कमल का रस, पगी रसीली भूमि – ऐसी जो रसमयी भूमि है । 'प्रणवऊँ श्रीवृषभानुपुर लता लूम रही झूमि ॥' उस बरसाने को शतशः प्रणाम है । यहाँ तक कि श्रीजी के मन्दिर में श्यामसुन्दर को चूनरी ओढ़ाकर इसीलिए रखा जाता है, इसके पीछे एक बहुत प्राचीन भाव यह है कि यहाँ कृष्ण साक्षात् रूप से महल में नहीं आ सकते । उनको यहाँ चूनरी ओढ़ाकर, सखी बनाकर लाया जाता है । इस बात को बहुत कम लोग जानते हैं । इसके पीछे एक बहुत गम्भीर लीला छिपी हुई है । यहाँ श्रीकृष्ण जो सखी रूप धारण करते हैं, उस लीला का राधावल्लभ सम्प्रदाय के प्रमुख सन्त श्रीध्रुवदासजी ने अपने ग्रन्थ 'बयालीस लीला' में विस्तार से वर्णन किया है । इस लीला को प्रायः सभी लोग नहीं जानते हैं, जबकि जानना चाहिए । जो भी व्यक्ति श्रीजी के मन्दिर में जाता है, वहाँ दर्शन भी करता है कि श्यामसुन्दर सहचरी रूप से हैं, चूनरी ओढ़े हुए हैं, ऐसा क्यों है ? इसको सब नहीं जानते ।

ध्रुवदासजी ने लिखा कि लाड़लीजी अपने महल से खेलने के लिए नित्य ही कभी गह्वर वन जाती हैं, कभी पीरी पोखर तो कभी प्रेम सरोवर जाती हैं । चाचा वृन्दावनदासजी ने अपने ग्रन्थ ब्रज प्रेमानन्द सागर में लिखा है कि श्रीजी नौबारी-चौबारी में गुड़िया-गुड्डा से खेलती थीं । राबड़ वन, पाडर वन आदि ये सब श्रीजी की विहार भूमि हैं । इन सब स्थलों की अलग-अलग लीलायें हैं । प्रकट लीला में कभी श्यामसुन्दर का श्रीजी के साथ साक्षात्कार नहीं हुआ था । एक बार श्रीजी प्रेम सरोवर पहुँचीं । प्रेम सरोवर केवल सरोवर ही नहीं है । वहाँ पर प्रेम वन है । नारायणभट्टजी द्वारा रचित ग्रन्थ 'ब्रजभक्तिविलास' के अनुसार प्रेम वन ब्रज के बारह उपवनों में से एक उपवन है । किसी समय वह वन बड़ा ही सघन था, वहाँ बहुत सुन्दर लतायें थीं । वहाँ श्रीजी अपनी अष्ट महासखियों के साथ आँख मिचौनी खेलने जाती हैं । नन्दलाल ने सुन रखा था कि महाराज वृषभानु की पुत्री बड़ी ही सुंदरी हैं और वे प्रेम वन में अपनी सखियों के साथ खेलने के लिए आती हैं । नन्दलाल ने श्रीजी के बारे में केवल सुना ही था, देखा नहीं था । इसलिए वे भी श्रीजी का दर्शन करने के लिए प्रेम वन गये । वहाँ उन्होंने देखा कि गौर वर्ण की अद्भुत सुन्दरियाँ कोई खेल खेल रही हैं । उन सभी के रूप बड़े ही आकर्षक थे । श्यामसुन्दर एक लता के भीतर छिपकर देखने लगे कि क्या खेल हो रहा है, कौन खेल रहा है ? ये सारा वन कितना सुन्दर लग रहा है । नन्द दास जी ने भी इस लीला का वर्णन करते हुए लिखा है कि ऐसा लगता है जैसे अनेक दामिनियाँ (बिजलियाँ) एक कुञ्ज से दूसरी कुञ्ज में जा रही हैं । जब वे कुंजों से निकलती हैं तो एक-एक सखी का मुख ऐसा प्रतीत होता है जैसे पूर्णिमा का चाँद निकलकर आ रहा है । सबके चरणों में नूपुर इस प्रकार बज रहे थे कि श्यामसुन्दर के नेत्र और मन अपने कानों में चले गये कि किधर से आवाज आ रही है, ऐसी आकर्षक उनकी ध्वनि थी । जब श्रीजी और उनकी सखियाँ खेल रही थीं तो श्यामसुन्दर छिपकर देख रहे थे । आँख मिचौनी के खेल में एक की आंखें बन्द कर दी जाती हैं और बाकी सब छिप जाते हैं । इसके बाद ताली बजायी जाती है, आँख खोल दी जाती है, फिर जितने लोग छिपे होते हैं, उनको ढूँढना पड़ता है, जिसको पकड़ लो, वही चोर बनता है, फिर उसकी आँख मूँदी जाती है । जिसको पकड़ लिया जाता था तो सभी सखियाँ सिमटकर आ जाती थीं । सभी सखियों के बीच में राधारानी की कान्ति सबसे अलग, सबसे विशेष थी । नन्दलाल छिपकर एकटक उन्हीं को देखते रहे कि ये कौन हैं ? उस रूप को देखकर वे चकित रह गये । जब एक सखी की आँख बन्द की गयी और सबसे कहा गया कि अब सब छिप जाओ तो सभी सखियाँ छिपने के लिए भाग गयीं । श्यामसुन्दर ने देखा कि श्रीजी एकान्त में एक सघन झाड़ी थी, उसी में जाकर बार-बार छिपती थीं । श्यामसुन्दर अवसर पाकर उसी कुञ्ज के भीतर चले गये, जहाँ श्रीजी छिपती थीं, वह बड़ी ही सघन कुञ्ज थी । उसके भीतर की ओर अन्धकार-सा था, वह बहुत बड़ी कुञ्ज थी । श्यामसुन्दर पहले से जाकर उसके भीतर बैठ गये । उधर ताली बजी और सब सखियाँ छिपने के लिए गयीं । श्रीजी उसी कुञ्ज की ओर बढीं । जब भीतर गयीं तो अपने मुख के प्रकाश में उन्होंने देखा कि एक नीलवर्ण का अत्यन्त सुन्दर बालक भीतर बैठा है । वे सोचने लगीं कि यह कौन बैठा है ? कभी उसे देखा नहीं था किन्तु वह इतना सुन्दर था कि उसका रूप श्रीजी के नेत्रों में गड़ गया । श्यामसुन्दर भी कुछ बोल नहीं पाए, वे श्रीजी को एकटक देखने लगे और देखते-देखते उनको प्रेम की मूर्च्छा आ गयी । श्रीजी के रूप को वे झेल नहीं पाए । इतने में वहाँ ताली बजी । श्रीजी को वहाँ जाना आवश्यक था, नहीं तो सखियाँ हल्ला मचातीं । श्रीजी बार-बार सोचने लगीं कि यह नीलवर्ण का बालक कौन था, जिसे प्रेम की मूर्च्छा आ गयी, यह तो बड़ा ही सुन्दर था । ये कैसे उठेगा, कौन इसका उपचार करेगा ? मैं तो इसके मुख पर पानी की छींट भी नहीं दे पायी । श्रीजी उदास भाव से दौड़ती हुई चली गयीं क्योंकि सखियाँ हल्ला मचा रही थीं । वहाँ पहुँचने पर यह निर्णय हुआ कि अब बहुत देर हो गयी है, खेल को यहीं समाप्त करना चाहिए, अन्यथा रानी कीर्ति कहेंगी कि तुम लोगों ने खेल में इतनी देर कर दी । श्रीजी तो चाहती थीं कि एक-दो बार और खेला जाए ताकि उस मूर्च्छित बालक का कुछ उपचार किया जा सके किन्तु सभी सखियों ने एक मत से यही कहा कि अब घर वापस चलना चाहिए । इसलिए श्रीजी उदास भाव से घर को चली गयीं, उनका मन तो उसी बालक के पास था, उनके पाँव नहीं उठ रहे थे । ललिता जी ने कहा – 'राधा ! जल्दी चल । तुझे ऐसी क्या थकान

आ गयी ?' श्रीजी ने कुछ नहीं कहा और अनमने भाव से चली गयीं । वे वृषभानु भवन में पहुँचीं तो वहाँ रात को सभी सखियाँ परस्पर मिलकर भोजन करती थीं । आज रात्रि को जब भोजन का समय आया तो श्रीजी उदास थीं । ललिताजी ने सोचा कि कोई बात अवश्य है । राधा प्रतिदिन की तरह भोजन नहीं कर रही है । इसी तरह सबेरे भी हुआ, श्रीजी उदास बनी रहीं । उनकी भोजन करने में, बातचीत करने में कोई रुचि नहीं थी । सदा गम्भीर उदास-सी बनी रहती थीं । संध्या के समय ललिताजी ने पूछा – 'राधा ! मैं देख रही हूँ कि तू भोजन नहीं कर रही है । क्या तुझे कोई व्याधि है, कोई कष्ट है, जो तू न तो बात करती है, न भोजन करती है । सच-सच बता, क्या बात है ?' ललिताजी ने बहुत हठ करके पूछा । अन्त में ललिताजी श्रीजी को एकान्त में ले गयीं कि इनकी उदासी का कारण क्या है ? श्रीजी ने कहा – 'ललिता ! जिस दिन हम लोग प्रेमवन में खेलने गयीं थीं ।' ललिताजी ने कहा – 'हाँ, उसी दिन मैं देख रही थी कि तेरे पाँव नहीं उठ रहे थे । क्या कोई काँटा चुभ गया था, क्या पीड़ा थी ?' राधारानी ने कहा – 'ललिता ! आँख मिचौनी के समय जब मैं एक कुञ्ज में छिपने के लिए गयी तो वहाँ पहले से ही कोई नीलवर्ण का बालक बैठा हुआ था । मैंने कभी उसको देखा नहीं था कि वह कौन था, कहाँ का रहने वाला था । इतना मुझे ध्यान अवश्य है कि उसके जैसा रूप संसार में कहीं है नहीं । वह मुझे एकटक देख रहा था और देखते-देखते मूर्च्छित हो गया, तब तक तुम लोगों ने ताली बजा दी और हल्ला मचाने लगीं । इसलिए मुझे वहाँ से भागना पड़ा । मुझे केवल यही चिन्ता है कि उसको किसने उठाया होगा, पीछे उसका क्या हुआ होगा, उसकी मूर्च्छा टूटी कि नहीं टूटी । यही चिन्ता मुझे अब तक हो रही है ।' ललिताजी ने कहा – 'अच्छा, वर्णन करो, उसका रूप कैसा था ?' श्रीजी ने कहा – 'उसका नीलवर्ण था ।' ललिताजी ने कहा – 'इस ब्रज में नीलवर्ण का तो एकमात्र नन्द का लाला ही है । अन्य किसी भी बालक का नीलवर्ण नहीं है और उसकी पहचान बताओ ।' श्रीजी ने कहा – 'उसका पीतवसन (पीताम्बर) है । हाथ में कनक लकुटिया और मस्तक पर मयूर-पंख है ।' ललिताजी ने कहा – 'बस-बस-बस, मैं समझ गयी । अन्य कोई ऐसा सुन्दर नहीं है । हे राधे ! वह तो नन्दनन्दन ही है, जो तुमको देखकर मूर्च्छित हो गया । अब मैं सब उपाय बना दूँगी । मैं अभी नन्दगाँव जाती हूँ । सब पता लगाकर आऊँगी ।' श्रीजी ने कहा – 'ठीक है, जाओ ।' ललिताजी नन्दगाँव गयीं । वहाँ सीधे वह नन्दभवन में गयीं । यशोदाजी ने कहा – 'आओ ललिता ! आज कैसे आई ?' ललिता जी बोलीं – 'बहुत दिन हो गये, मैंने सोचा कि चलो आज यशोदा जी की कुशलता पूछ आऊँ ।' इस तरह ललिता जी ने बात बना दी । यशोदाजी – 'ललिता ! आओ बैठो ।'

ललिताजी – 'मैं तो केवल तुम्हारे दर्शन करने के लिए आ गयी । देर हो जायेगी, अब तो मैं जाऊँगी ।' चलते समय ललिताजी ने श्यामसुन्दर को इशारा कर दिया । श्यामसुन्दर भी ललिताजी से मिलना चाह रहे थे । एक विचित्र बात नन्दगाँव में यह है कि वहाँ जितने भी कुण्ड हैं, उनमें से किसी भी कुण्ड का नाम किसी ग्वाल बाल के नाम पर नहीं है किन्तु वहाँ पर ललिता कुण्ड है । इसका कारण यही है कि ललिताजी श्यामसुन्दर को एकान्त में वहाँ पर ले गयी थीं । वहाँ की समस्त लीला की सूत्रधार ललिताजी ही हैं । नन्दगाँव में ललिता कुण्ड का यही रहस्य है । ललिता जी ने श्यामसुन्दर से कहा – 'नन्दनन्दन ! मैं तुम्हारी कुशलता जानने के लिए यहाँ आई हूँ । तुम कुछ उदास लगते हो, तुम्हारी कैसी हालत है ?' श्यामसुन्दर – 'हाँ, मैं उदास हूँ ।' ललिताजी – 'इसका कारण क्या है ?' श्यामसुन्दर – 'जिस दिन मैं प्रेमवन में गया था, वहाँ मैं एक कुञ्ज में पहले से छिपकर बैठ गया था , जहाँ श्रीजी आकर छिपती थीं । वे उस कुञ्ज में आयीं तो मैं एकटक उनके रूप को देखता रहा और फिर मुझे मूर्च्छा सी आ गयी । जब मेरी मूर्च्छा टूटी तो वहाँ कोई नहीं था । न तो श्रीजी थीं और न ही तुम सब सखियाँ थीं । खेल भी समाप्त हो गया था ।' ललिताजी – 'हाँ, हम लोग विलम्ब होने के कारण चली गयी थीं ।' श्यामसुन्दर – 'उसी दिन से मैंने भोजन नहीं किया । अब तो मुझे न माखन अच्छा लगता है और न ही दूध-दही अच्छा लगता है ।' ललिताजी – 'ठीक है, अब तुम क्या चाहते हो ?' श्यामसुन्दर – 'मैं यही चाहता हूँ कि किसी प्रकार से राधारानी के दर्शन हो जाएँ । क्या तुम मुझे उनका दर्शन करा सकती हो ?' ललिताजी – 'हाँ, मैं दर्शन करा दूँगी किन्तु तुमको एक उपाय करना होगा क्योंकि वहाँ महाराज वृषभानुजी का

महल है, वहाँ रनिवास के भीतर कन्यापुर है, वहाँ कोई जा नहीं सकता है । तुमको सहचरी का रूप बनाना होगा ।' श्यामसुन्दर – 'ठीक है, मुझे सखी बना दो ।' अब तो ललिता जी ने उस कुण्ड के किनारे श्यामसुन्दर का सखी वेष का श्रृंगार किया और उन्हें अपने साथ बरसाने लेकर आयीं और उनको सब सिखा दिया कि वृषभानु भवन में तुमसे कोई कुछ पूछे तो तुम जवाब मत देना । सबका उत्तर मैं ही दूँगी । तुम तो मेरे पीछे-पीछे घूँघट करके चले आओ । ललिताजी ने श्यामसुन्दर का लम्बा सा घूँघट कर दिया और जब बरसाना पहुँचीं तो सबसे पहले महाराज वृषभानु का दरबार पड़ा, जिसे आज की भाषा में कचहरी कह सकते हैं । वहाँ तो किसी ने कोई पूछताछ नहीं की क्योंकि सब यही समझे कि ललिता के साथ किसी की बहू जा रही होगी किन्तु जब ललिताजी वृषभानुजी का दरबार पार करके रानी कीर्तिजी के महल में होकर उसके भीतर कन्या अन्तःपुर में जाने लगीं । वह महल बहुत विशाल था, ऐसा नहीं था, जैसे कि आजकल श्रीजी का मन्दिर दिखाई देता है । ग्रन्थों को पढ़ने पर पता चलता है कि महाराज वृषभानुजी का भवन कितना विशाल था । पहले वृषभानुजी का सभा भवन, उसके बाद कीर्तिजी की निवास स्थली, उसको पार करके कन्याओं का अन्तःपुर था । जब ललिताजी श्यामसुन्दर को वधू के वेष में कीर्तिरानी की निवासस्थली से होकर निकलीं तो वहाँ बहुत-सी वयोवृद्ध स्त्रियाँ बैठी थीं । उन्होंने ललिताजी से पूछा – अरी 'ललिता ! कहाँ से आ रही है ?' ललिता जी ने कहा – 'मैं नन्दगाँव गयी थी ।' सबने पूछा – 'क्यों गयी थी ?' ललिताजी ने कहा - 'यशोदाजी मुझसे बड़ा प्रेम करती हैं । कभी-कभी यमुना-स्नान करते समय मिल जाती हैं । एक दिन मुझसे कह रही थीं कि ललिता, तू तो मुझसे कभी मेरी कुशलता भी नहीं पूछती है, तेरे मन में मुझसे कैसा प्रेम है ? इसलिए मैंने सोचा कि चलो, आज यशोदाजी का कुशल-मंगल पूछ आऊँ ।' उन स्त्रियों ने पूछा – 'तेरे साथ में कौन है ?' ललिताजी ने कहा – 'यह प्रभावती की बेटी है ।' प्रभावती नन्दनन्दन की ताई थीं । ललिताजी ने कहा – 'इसका विवाह यहीं गाँव में हुआ है । मुझे रास्ते में ही यह मिल गयी और कहने लगी कि मुझे राधा से मिला दो तो मैं इसे राधा से मिलाने ले जा रही हूँ ।' ललिता की बात सुनकर सभी स्त्रियाँ बड़ी प्रसन्न हो गयीं और फिर ललिता जी नन्दनन्दन को शीघ्र ही श्रीजी के पास ले गयीं और उन्हें नन्दनन्दन से मिलवाया । राधामाधव का परस्पर मिलन होने से उनका संताप दूर हुआ और दोनों ही आनन्द में भर गये ।

श्रीजी के मन्दिर में इसी भाव से श्यामसुन्दर को चुनरी ओढ़ाकर रखा जाता है क्योंकि चुनरी पहनकर ही उनका महल के भीतर प्रवेश हुआ था । लोग तो केवल दर्शन करके चल देते हैं, उन्हें इस रहस्य का कुछ भी पता नहीं है । राधामाधव के विग्रहों को ध्यान से देखो तो एक ही चुनरी श्यामसुन्दर और राधारानी ओढ़े हुए हैं । इस चुनरी की यह कथा है । इसीलिए रसिकों ने गाया – **बरसाने के वास को, आस करें शिव शेष ।**

यहाँ की महिमा को कहै, जहाँ कृष्ण धरें सखी वेष ॥

ये सब ऐसी रसमयी कथायें हैं कि जिनके हृदय में रस है, वे ही इसे समझ सकते हैं ।

श्रीराधा-कृष्ण का शाश्वत सम्बन्ध

कुछ अल्पज्ञ लोगों के द्वारा अनादि नित्य सिद्ध दिव्य दम्पत्ति श्रीराधाकृष्ण के विवाह के सम्बन्ध में फैलाये जा रहे मिथ्या भ्रमों के निवारण हेतु विविध शास्त्र-प्रमाणों द्वारा संक्षिप्त वर्णन –

श्रीकृष्ण के ही कलांश से उत्पन्न रायाण गोप से छाया राधा का विवाह हुआ था, न कि वास्तविक राधा का । महाभागवत भक्तराज श्रीध्रुव महाराज के वंश में उत्पन्न चक्रवर्ती सम्राट महाराज केदार की कन्या वृन्दा ही श्रीकृष्ण की आज्ञा से श्रीजी के विवाह के अवसर पर छाया राधा के रूप में रूप में प्रकट हुई थीं । श्रीकृष्ण की चिरसंगिनी वास्तविक राधा के साथ तो श्रीकृष्ण का ही विवाह वृन्दावन में ब्रह्माजी के द्वारा सम्पन्न कराया गया था ।

यह प्रसंग विस्तार से ब्रह्मवैवर्त पुराण में एक जगह नहीं अपितु कई बार आया है । जैसे ब्रह्मवैवर्तपुराण के प्रकृतिखण्ड, अध्याय ४९ में भगवान् शंकर ने पार्वतीजी को सुनाया । इसी ब्रह्म वैवर्त पुराण के श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अध्याय १५ के

अनुसार भगवान् नारायण ने देवर्षि नारदजी को सुनाया । श्रीकृष्ण जन्म खण्ड के ही अध्याय ८६ के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं अपने पिता नन्द जी को यह प्रसंग सुनाया । श्रीकृष्ण जन्म खण्ड में ही अध्याय १११ के अनुसार स्वयं श्रीराधारानी ने श्री यशोदाजी के सम्मुख यह प्रसंग वर्णन किया ।

ब्रह्मवैवर्त पुराण प्रकृति खण्ड, अध्याय ४९ के अनुसार भगवान् शंकर पार्वतीजी से कहते हैं – (श्रीराधा अपने नित्य धाम से) ब्रज में श्री वृषभानु गोप की कन्या हुईं । वे देवी अयोनिजा थीं, माता के उदर से पैदा नहीं हुईं थीं । बारह वर्ष बीतने पर उन्हें नूतन यौवन में प्रवेश करती देख माता-पिता ने 'रायाण' गोप के साथ उसका सम्बन्ध निश्चित कर दिया । **'छायां संस्थाप्य तद्गेहे सान्तर्धानमवाप ह । बभूव तस्य वैश्यस्य विवाहश्छायया सह ॥'** उस समय श्रीराधा अपने भवन में अपनी छाया को स्थापित करके स्वयं अन्तर्धान हो गयीं । उस छाया के साथ ही उक्त रायाण गोप का विवाह हुआ । श्रीशिवजी कहते हैं – हे पार्वती ! वास्तविक राधा के साथ तो – **'कृष्णेन सह राधायाः पुण्ये वृन्दावने वने । विवाहं कारयामास विधिना जगतां विधिः ॥'** जगत सृष्टा विधाता (ब्रह्माजी) ने पुण्यमय वृन्दावन में श्रीकृष्ण के साथ साक्षात् श्रीराधा का विधिपूर्वक विवाह कर्म सम्पन्न कराया ।

"श्रीकृष्णपत्नी सा राधा तदर्धाङ्गसमुद्भवा । तेजसा वयसा साध्वी रूपेण च गुणेन च ॥"

वास्तविक श्रीराधा तो श्रीकृष्ण के वक्षःस्थल में वास करती थीं और छाया राधा रायाण गोप के घर में ।

'स्वयं राधा हरेः क्रोडे छाया रायाणमन्दिरे ॥'

ब्रह्मवैवर्त पुराण, श्रीकृष्णजन्म खण्ड, अध्याय ३, श्लोक १०४ के अनुसार – भगवान् नारायण देवर्षि नारदजी से कहते हैं – **'रायणः श्रीहरेरंशो वैश्यो वृन्दावने वने । मूढा रायाण पत्नी त्वां वक्षयन्ति जगती-तले ॥'**

गोकुल में श्रीकृष्ण के ही अंश महायोगी रायाण नामक एक वैश्य होंगे । श्रीराधा का छाया रूप उनके साथ रहेगा लेकिन भूतल पर मूढ (मूर्ख, अविवेकी) लोग वास्तविक श्रीराधा को ही रायाण की पत्नी समझेंगे ।

ब्रह्मवैवर्त पुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड, अध्याय १११, श्लोक ५६ के अनुसार – श्रीराधारानी स्वयं श्रीयशोदाजी से कहती हैं – **'अहमेव स्वयं राधा छाया रायाणकामिनी । रायणः श्रीहरेरंशः पार्षदप्रवरो महान् ॥'**

मैं ही स्वयं राधा हूँ और रायाण गोप की भार्या मेरी छाया मात्र हैं । रायाण श्रीकृष्ण के अंश, श्रेष्ठ पार्षद और महान हैं ।

वास्तविक राधा से भिन्न छाया राधा कौन हैं ? उनका परिचय – ब्रह्मवैवर्त पुराण, श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, अध्याय ८६ के अनुसार – भगवान् श्रीकृष्ण अपने पिता नन्दजी से कहते हैं – ब्रह्मा जी के पुत्र स्वायम्भुव मनु हुए, उनके पुत्र उत्तानपाद, उनके भक्तराज ध्रुवजी, उनके नन्द सावर्णि और उनके पुत्र महाराज केदार हुए । ये बड़े विष्णु भक्त और सम्पूर्ण पृथ्वी के एक छत्रसम्राट थे । उनके यहाँ यज्ञ कुण्ड से एक कन्या प्रकट हुई, जिसका नाम वृन्दा था, जिन्होंने श्रीकृष्ण को पति रूप में प्राप्त करने के लिए वृन्दावन में घोर तप किया । उनके तप से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी ने वर दिया कि कुछ काल के बाद तुम श्रीकृष्ण को प्राप्त होओगी । फिर ब्रह्माजी ने उनकी परीक्षा के लिए साक्षात् धर्म को एक तरुण ब्राह्मण के रूप में भेजा । वहाँ जाकर धर्म ने कहा – मनोहरे ! तुम किसकी कन्या हो ? तुम्हारा क्या नाम है ? यहाँ एकान्त में तुम क्या कर रही हो ? यह मुझे बतलाओ । 'विप्र केदार कन्याऽहं वृन्दा वृन्दावने स्थिता । तपः करोमि रहसि चिन्तयामि हरिं पतिम् ॥'

वृन्दा बोली – विप्रवर ! मैं केदारराज की कन्या हूँ, मेरा नाम वृन्दा है । मैं इस वृन्दावन में वास करती हुई एकान्त में तपस्या कर रही हूँ और श्रीकृष्ण को अपना पति बनाने के लिए चिन्तातुर हूँ । धर्म ने कहा – **'गोलोके द्विभुजस्यापि श्रीवंशीवदनस्य च । किशोरगोपवेषस्य परिपूर्णतमस्य च । तस्य भार्या स्वयं राधा महालक्ष्मीः परात्परा ॥'**

'वृन्दे ! गोलोक में जो द्विभुज, वंशी बजाने वाले, किशोर गोप वेषधारी, परिपूर्णतम श्रीकृष्ण हैं, उनकी पत्नी स्वयं परात्परा महाशोभाशालिनी श्रीराधा हैं और श्रीकृष्ण तो गोलोक में केवल राधिका द्वारा ही साध्य हैं, दूसरा कोई कभी भी उन्हें सिद्ध नहीं कर सकता ।' **'न वास्तव परीक्षार्थं बोधितुं ब्रज ।'** इतना कहकर छद्मवेषधारी धर्म ने उनके सतीत्व की परीक्षा के लिए प्रचुर भोगसुख का प्रलोभन दिया और अपने को ही पतिरूप में स्वीकार करने का अनुरोध किया तथा वे वृन्दा की

तरफ बढ़ने लगे । तब उनकी यह चेष्टा देखकर उस राजकन्या वृन्दा ने पातिव्रत धर्म की महिमा और दुराचार की निन्दा करके छद्मवेषधारी धर्म को कोप करते हुए शाप दे दिया –

'शशापेति च सा कोपाद् ब्रह्मबन्धो क्षयो भव । क्षयो भव दुराचार हे पापिष्ठ क्षयो भव ॥
पुनः शप्तं स्वयं सूर्यो वारयामास यत्नतः । एतस्मिन्नन्तरे तात तत्रैव जगदीश्वराः ॥
आजग्मुरतिसंत्रस्ता ब्रह्मविष्णुशिवादयः । धर्मं दृष्ट्वा कलारूपं रुरुदुस्त्रिदशेश्वराः ॥'

'हे ब्रह्मबन्धु ! तू नष्ट हो जा । दुराचारी ! तेरा नाश हो जाए । पापिष्ठ ! तुम नष्ट हो जाओ ।' इतना कहकर जब पुनः शाप देने को उद्यत हुई तब स्वयं सूर्य भगवान् ने प्रकट होकर उसे यत्न करके रोक दिया । इसी बीच वहाँ ब्रह्मा, शिव, सूर्य और इन्द्र आदि देवता आ पहुँचे । सबने उससे क्षमा माँगी और कहा कि धर्म तुम्हारी परीक्षा के लिए आये थे । उसके मन में तनिक भी पाप बुद्धि नहीं थी । वृन्दा के शाप से कला रूप में शेष धर्म को देखकर सभी दुखी हुए । ब्रह्मादि देवताओं ने वृन्दा से कहा कि तुमने अनजाने में धर्म को शाप दे दिया है, अतः धर्म के नाश से जगत के सनातन धर्म रूप जीवन का नाश हो जाएगा । ऐसा कहकर सबने धर्म को जीवन दान देने की वृन्दा से प्रार्थना की । धर्म की पत्नी मूर्ति देवी ने आकर रोते हुए अपने पति की रक्षा के लिए भगवान् श्रीहरि से प्रार्थना की । तब स्वयं श्रीभगवान् ने वृन्दाजी से कहा – सुन्दरि ! तुमने तपस्या के द्वारा ब्रह्मा की आयु के सामान आयु प्राप्त की है । वह अपनी आयु तुम धर्म को दे दो और स्वयं गोलोक को चली जाओ । वहाँ तुम तपस्या के प्रभाव से इसी शरीर द्वारा मुझे प्राप्त करोगी । जब मेरी प्राणेश्वरी श्रीराधा वृषभानु की सुता के रूप में भूतल पर प्रकट होंगी तब – **'वृषभानुसुता राधा त्वं च राधाच्छाया भविष्यसि ।**
मत्कलांश्च रायाणरू त्वां विवाहे ग्रहीश्यति ॥' तुम उनकी छायाभूता राधा होगी, उस समय मेरे कलांश से उत्पन्न हुये रायाण गोप तुम्हारा पाणिग्रहण करेंगे । फिर रास क्रीड़ा के अवसर पर तुम गोपियों तथा वास्तविक श्रीराधा के साथ मुझे प्राप्त करोगी । **'सा एव वास्तवी राधा त्वं च च्छायास्वरूपिणी ॥ विवाहकाले रायाणस्त्वां च च्छाया ग्रहिष्यति ।**
त्वाम् दत्त्वा वास्तवी राधा सान्तर्धाना भविष्यति ॥ राधां कृत्वा च तां मूढा विज्ञास्यन्ति च गोकुले ।'

उस समय वे ही वास्तविक राधा रहेंगी । तुम तो उनकी छाया स्वरूपा होओगी । विवाह के समय वास्तविक राधा तुम्हें प्रकट करके स्वयं अन्तर्धान हो जायेंगी और रायाण गोप तुम छाया को ही ग्रहण करेंगे, परन्तु मोहाच्छन्न लोग तुम्हें ही वास्तविक राधा समझेंगे । उन लोगों को तो स्वप्न में भी वास्तविक श्रीराधा के चरण कमलों का दर्शन नहीं होता, क्योंकि 'स्वयं राधा हरेः क्रोडे छाया रायाण मन्दिरे ।' स्वयं श्रीराधा तो मेरे अंक में किंवा हृदय में रहती हैं और उनकी छाया रायाण की भार्या होती है ।

असली औषधि 'संतों का वात्सल्य-प्रेम'

बड़े बाबा (श्रीप्रियाशरणजीमहाराज) की कृपापात्रा 'श्रीकुसुम दीदी' के भावोद्गार

बड़े बाबा (श्रीप्रियाशरण बाबा) का लाड़-प्यार और उनकी कृपा श्रीरमेश बाबा को तथा मुझे मिली, उसकी कोई तुलना ही नहीं की जा सकती, उसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता । माँ की ममता से भी अधिक उनका लाड़ प्यार मुझे मिला । उनकी विशेष कृपा रमेश बाबा पर भी थी और मुझ पर भी थी । श्रीबाबा भी सन् १९५३ में ब्रज में आये और मैं भी उसी समय आई थी । बड़े बाबा का वात्सल्य हम दोनों (श्रीबाबा और मुझ) पर रहा । सन्तों की कृपा मुझे बचपन से ही मिली । मैं सन् १९५४ में रमणरेती वाले हरिनामदास महाराजजी की यात्रा में गयी थी, उसी यात्रा में रमेशबाबाजी और लाड़लीदासजी भी गये थे । पहले तो मैं घर वालों के साथ वृन्दावन आती-जाती रही । मेरी दादी ने वृन्दावन में ही कमरा बना लिया था । हरिनामदासजी की ब्रजयात्रा में भारत के बड़े-बड़े सन्त आये थे ।

बड़े बाबा ने किसी को अपना शिष्य नहीं बनाया किन्तु दो सन्तों को विरक्त वेष प्रदान किया था । एक तो विशाखाशरणजी को और एक बिहारीदासजी को उन्होंने वेष दिया था । 'बिहारीशरण बाबा' एक बार बीमार पड़े तो उन्हें देखने के लिए बड़े बाबा बरसाना से गये थे । उस समय हम सब लोग यात्रा में थे । वहाँ मैंने उनका दर्शन किया था ।

यात्रा में २०० लोग थे । उस यात्रा के सन्तों ने मुझे बड़े बाबा से मिलवाया और उनसे कहा कि इस बालिका पर आप कृपा कीजिए । बड़े बाबा ने मुझसे कहा कि तुम 'ब्रज प्रेमानन्द सागर' ग्रन्थ पढ़ा करो । यह बड़ा ही अद्भुत ग्रन्थ है, इसमें श्रीजी की प्राकट्य-लीला, बाल-लीला, सखियों के साथ उनकी लीला, विवाह लीला इत्यादि का वर्णन किया गया है । मैं घर में रहती थी और उस ग्रन्थ को पढती थी । उसके बाद मुझे बड़े बाबा का दर्शन 'प्रेम सरोवर' पर हुआ । वहाँ गोपाल मन्दिर में वे रहते थे । मुझे सन् १९६० से स्थायी रूप से ब्रजवास की प्राप्ति हुई । पहले मैं ब्रज में आती-जाती रहती थी । पिताजी मुझे यहाँ छोड़ते नहीं थे । उस समय मैं बड़े बाबा का दर्शन करके चली जाती थी । वे किसी से बोलते नहीं थे । हर समय उनका भजन चलता रहता था, राधा नाम का जप चलता रहता था । वे किसी को दिखाने के लिए साधना या भजन नहीं करते थे । उनकी साधना तो सिद्ध थी ।

प्रश्न – आप श्रीरमेशबाबा महाराज के बारे में भी थोड़ा बताइए ?

उत्तर – श्रीबाबा से मेरी पहिचान हरिनामदासजी की यात्रा से हुई । यात्रा में जब हम दो सौ लोग बरसाना आते थे तो गह्वरवन में ही रुकते थे । उस समय यहाँ इतनी झाड़ियाँ थीं कि कोई इस वन में प्रवेश नहीं कर सकता था । बाबा भी उसी समय मानमन्दिर में आये हुए थे और हम लोग भी वहाँ आते रहते थे । दिन में तो सभी यात्री गह्वरवन में कुएँ के पास रहते थे, वहीँ रोटी बनाते थे तथा रात को हम लोग मानमन्दिर में चले जाते थे । वहाँ पर एक छोटी-सी कुटिया सबसे ऊपर थी, उसमें कोई नहीं रहता था, खाली पड़ी थी । रात को हम सभी लोग मानमन्दिर में ही संकीर्तन का आनन्द लेते थे । उस समय रात को मानमन्दिर में कीर्तन होता था और गाँव के ब्रजवासी कीर्तन करते, पद गाते थे । कीर्तन में कोई नाच रहा है, कोई रो रहा है, कोई हँस रहा है । एक बार रात को बड़ा भारी तूफान आया । वह ऐसा तूफान था कि लगा सबको उड़ा ले जाएगा । उस समय बाबा भी हमारे साथ थे । तूफान इतना भयानक था कि ऐसा लगता था कि यह सबको उड़ाकर नीचे ले जाएगा और जो नीचे गिरेगा, उसका कुछ पता नहीं चलेगा । बड़े जोर से पानी भी गिरने लगा । उस समय रमेशबाबाजी ने सबसे कहा कि इस कुटिया में तुम सब घुस जाओ । सभी लोग उसमें घुस गये और पता नहीं कि वह छोटी-सी कुटिया कैसे बढ़ गयी ? एक छोटी-सी कोठरी में सारे यात्री आ गये । बाबा ने किवाड़ बन्द किये और खड़े हो गये । तूफान इतना भयानक था कि मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा । उस समय कोठरी में खड़े होकर बाबा ने एक पद गाया – 'वंशी की तान सुनाने को, कब आओगे श्याम कदम्ब के तले ।' यह पद गाकर तो बाबा ने गजब ही कर दिया, क्या कहना, सभी को भावसमाधि-सी लग गई (सब प्रेम में मूर्च्छित-से हो गए) । उस समय सबकी क्या दशा हुई, इसे कहा नहीं जा सकता, कोई अपने होश में नहीं रहा । प्रेम के आवेश में सबकी चीख निकल रही थी, लोग रो रहे थे । कोई गिर रहा था, लोट रहा था, ऐसा आनन्द तो जीवन में आज तक कभी मुझे नहीं मिला । बड़े आश्चर्य की बात कि हम २००-२५० लोग उस छोटी-सी कोठरी में घुसे थे, बाबा भी हमारे साथ थे । ब्रह्मचारीजी की वह कोठरी थी । राधारानी की कृपा से उस छोटी-सी कोठरी में सभी आ गये, बाबा के पदगान को सुनकर कोई रोने लगा, कोई चीखने लगा, कोई धरती पर लोटने लगा । कैसा करुण क्रन्दन था, बाबा ने ऐसा पद गाया कि सभी को दिव्य प्रेम के रंग में रंग दिया । ऐसा मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा । आप लोग अपने बाबा (पूज्य श्रीबाबामहाराज) से पूछना कि जब बरेली वाले आपके यहाँ एक बार आये थे और रात को तूफान आ गया तो उस समय आपने सभी को एक छोटी सी कोठरी में घुसा दिया था तथा फिर आपने किवाड़ बंद करके रात भर एक पद गाया । मुझे तो पता ही नहीं पड़ा, मैं तो उनकी गोदी में ही लेटी रही, मुझको लग रहा था कि मैं श्रीजी की गोदी में हूँ । बाबा ऐसा बता रहे थे कि मुझे लगा कि मेरी गोद में श्रीजी हैं । सभी लोग अपने भाव में ऐसा डूब गये कि वह सुख, उस आनन्द का वर्णन ही नहीं किया जा सकता है ।

हरिनामदासजी की यात्रा में सभी को पहरे और कीर्तन की ड्यूटी दी जाती थी । बाबा की भी उस यात्रा में पहरे की ड्यूटी रहती थी । बाबा उस यात्रा में कीर्तन भी करते थे । मानमन्दिर में रात को बाबा का बड़ा ही दिव्य कीर्तन होता

था । बड़े जोर से नगाड़े-ताशे बजते थे । पूरे बरसाने में उस कीर्तन की आवाज गूँजती थी । मैंने जब पहली बार मानमन्दिर देखा तो खण्डहर हो चुका था, मन्दिर में कुछ नहीं था, दीवारें भी टूटी-फूटी थीं; चोर-डाकू रात को वहाँ बँटवारा करते थे ।

एक बार मैं बाबा के दर्शन करने गयी तो बड़े ही भाव-विह्वल होकर वे बोले कि अपने बाबा के तो अब केवल हम और तुम, दो ही रह गये हैं । बाबा तो अब चले गये । मैंने देखा कि इस समय बाबा अपने को भावावेश में सम्भाल नहीं पा रहे हैं तो मैंने उन्हें धैर्य बँधाते हुए कहा – 'बाबा कहाँ गये, बाबा तो अभी हैं ।' तब वे बोले – 'दीखते तो हैं नहीं ।' श्रीबाबा को बड़े बाबा के वियोग में बड़ा दुःख हो रहा था क्योंकि बड़े बाबा महाराज का जो प्यार बाबा को मिला और मुझे मिला, ऐसा प्यार किसी अन्य को नहीं मिला । उस समय बाबा के हृदय में कितनी व्यथा थी, उसे मैं ही समझ सकती हूँ । फिर बाबा ने मुझसे कहा कि तुम रोज यहाँ पदगान में रसमण्डप आ जाया करो, यदि तुम्हें बैठने में कठिनाई हो तो लेट जाया करो । एक महिला जो मुझे बाबा के दर्शन कराने ले गयी थी, मैंने उससे कहा कि बाबा ने मुझे इतना बुलाया है तो मुझे वहाँ ले चलो ...।

बड़े बाबा जब प्रेमसरोवर पर रहते थे तो वे परिक्रमा करते हुए गह्वरवन में आते थे, उस समय बाबा की वहाँ कुटिया थी, वहाँ वे बैठते थे, तब दोनों की वहाँ बात हुआ करती थी ।

एक दिन तो बाबा मुझसे नाराज भी हो गये और कहने लगे कि तू अपनी कुटिया में अकेली पड़ी कितना दुःख पा रही है । तू गह्वरवन में रसकुञ्ज में रह । सौ से अधिक लड़कियाँ तेरी सेवा करेंगी । बाबा ने तो मुझसे कई बार कहा कि तू हमारे गह्वरवन में ही रह । पहले जब बाबा यात्रा के साथ चलते थे तो जब श्रीजी मन्दिर में वे जाते थे तो मैं भी उनकी कथा सुनने के लिए चली जाती थी कि देखें, बाबा बरसाने के बारे में क्या बोलते हैं ? एक बार मैं यात्रा के समय ही श्रीजी के मन्दिर में बैठी थी तो मुझे देखकर बाबा ने कहा – 'यह कुसुम बैठी है, इसको मैंने कितनी बार कहा कि रसकुञ्ज में रहो, वहाँ सब तुम्हारी सेवा करेंगे किन्तु यह मानती नहीं है । इसीलिए अब तो नाराज होकर मैंने इससे बोलना ही छोड़ना दिया है ।' उस समय मैंने मन में सोचा कि अब मैं क्या करूँ ? पहले जब माताजी जीवित थीं और बाबा शाम को कुटी में कथा कहते थे तो मैं वहाँ जाती रहती थी, माताजी के पास बैठा करती थी । बाबा देखते थे कि यह माताजी के पास बैठी है, माताजी ने अपने पास ही इसे बैठाया है । अभी भी बाबा हमेशा कहते हैं कि तू हमारे यहाँ ही रह, सब तेरी सेवा करेंगे । एक दिन मैं उनसे मिली तो बाबा ने मुझसे कहा – 'कुसुम ! तुम्हें 'जयपुर-मन्दिर' में कोई भी परेशानी हो तो आधी रात के समय भी 'मानमन्दिर का द्वार' तुम्हारे लिए खुला हुआ है । आधी रात को ही चली आना, तुम्हारे लिए मानमन्दिर का द्वार कभी बन्द नहीं रहेगा ।' यह उनका प्यार ही तो है, नहीं तो आधी रात को कोई किसी को अपने स्थान में घुसने देगा ? मैंने बाबा से कहा था कि बाबा ! मैं मानमन्दिर में तो रह लूँगी । बाबा ने कहा कि मानमन्दिर में लड़कियाँ-स्त्रियाँ तो रहती नहीं हैं लेकिन कोई बात नहीं, तेरे लिए वहाँ भी रहने को व्यवस्था हो जायेगी । मैं पण्डितजी से बात करके तेरे लिए मानमन्दिर में ही कमरा बनवा दूँगा, फिर यहीं रहना । इस प्रकार से श्रीबाबा का प्रेम तो मेरे प्रति बचपन से ही है । मुझे तो सन्तों ने ही पाला है, मैं तो सन्तों की ही हूँ । न तो कोई मेरी माता है, न पिता है, सन्त ही मेरे माता-पिता हैं । ब्रज और सन्त ही मेरे सब कुछ हैं ।

हीन व्यक्ति के साथ बुद्धि 'हीन' हो जाती है, समान व्यक्ति के साथ बुद्धि 'समान' हो जायेगी और महापुरुषों के संग से बुद्धि 'महान' बन जाती है ।

साधन करना आवश्यक है, लेकिन 'मैं कर रहा हूँ' यह साधन का अहम् नहीं करना चाहिए ।

परीक्षा की कसौटियाँ होती हैं । धैर्य रखना चाहिए ; जिसके अन्दर धैर्य नहीं है, वह भजन नहीं कर सकता ।

'तरोरपि सहिष्णुना' सहिष्णु नहीं है तो भजन नहीं कर पायेगा ।

संकीर्तन से ब्रजसेवा सहज

भामिनीशरणजी के भावोद्गार

बाबा महाराज के निर्देश में पहले कुटी (वर्तमान काल के रस कुञ्ज) में अखण्ड कीर्तन हुआ करता था । श्रीबाबा महाराज तब शास्त्रीय संगीत पर आधारित रागों के अनुसार युगल मन्त्र के कीर्तन की नवीन धुनों की रचना किया करते थे । जब मैं कोसी से वापस आकर मान मन्दिर में रहने लगा तो कुटी में संध्या काल के सत्संग के बाद और रात्रि पद गान से पहले एक दिन श्रीबाबा ने मेरा नवीन नामकरण किया । पहले बाबा महाराज कुछ लोगों के नाम उनके पिछले नामों के पहले अक्षर से रखते थे । मेरे पूर्व नाम का पहला अक्षर 'म' था तो बाबा ने हिन्दी वर्णमाला के अनुसार 'म' के पहले के अक्षर 'भ' से मेरा नाम रखा । उन्होंने कीर्तन कर रहे भक्तों के समक्ष कहा कि मैं इसका ऐसा नाम रखूँगा, जो किसी का नहीं होगा । राधारानी के अगणित नामों में एक नाम है भामिनी तो आज से इसका नाम होगा भामिनीशरण । संध्याकालीन सत्संग के पश्चात् और रात्रि पदगान से पहले भी तब कुटी में कीर्तन होता था । श्रीबाबा ने दादरा की तालों पर आधारित बहुत से नूतन रागों में युगल मन्त्र की धुनों की रचना की थी । श्रीबाबा महाराज की आज्ञा से उन दिनों ब्रजराजजी सभी को उन नवीन रागों पर आधारित धुनों का अभ्यास कराते थे । वे धुनें दादरा की ताल पर थीं तो बाबाश्री ने कहा था कि सभी लोग ढोलक पर दादरा ताल के अभ्यास सहित इन नई धुनों को सीखो । श्रीबाबा ने उस समय कहा था कि मान मन्दिर में सभी को ढोलक-हारमोनियम सिखा दिया जाता है । यहाँ पर गधों को घोड़ा बनाया जाता है । मेरे प्रारम्भिक वास के समय ही श्रीबाबा ने माधवीशरणजी से मुझे व कुछ अन्य साधुओं को ढोलक-हारमोनियम सिखाने को कहा था । उन दिनों श्रीबाबा ने रस मन्दिर में भी अखण्ड कीर्तन प्रारम्भ कराकर मुझे भी वहाँ कीर्तन करने को कहा था । उनकी आज्ञा से हम वहाँ कीर्तन करते थे । पहले तो ढोलक से ही कीर्तन करते थे, हारमोनियम बजाना मुझे नहीं आता था । एक दिन श्रीबाबा ने ब्रजराजजी को रस मन्दिर भेजा और मेरे लिये कहा कि उसे ढोलक बजाना आ गया है, अब उसे हारमोनियम सिखा दो तो उन्होंने श्रीबाबा द्वारा रचित संगीत की पुस्तक 'स्वर वंशी के शब्द नूपुर के' से एक बहुत ही सरल राग 'भूपाली' सिखाया । उसका नोटेशन बहुत ही सरल था, उसको बड़ी आसानी से सीख लिया, फिर उसके बाद अन्य भी बाबा द्वारा रचित राग हारमोनियम पर बड़ी सरलता से निकालना आ गया । श्रीबाबा महाराज चाहते हैं कि मान मन्दिर सेवा संस्थान के सभी स्थानों पर सदैव अखण्ड रूप से कीर्तन होता रहे और यहाँ के साधक-साधिकाएँ ढोलक-हारमोनियम सीखकर युगल मन्त्र के कीर्तन की नई-नई धुनें सीखें । अन्य गुरुओं की तरह श्रीबाबा भजन की परम्परागत प्रणाली माला पर भजन करने की सलाह न देकर सभी को कीर्तन करने की शिक्षा देते हैं । इसके लिए वे बताते हैं कि चैतन्य चरितामृत के अनुसार – '**जपि लेइ हरिनाम करिया निज साधन, उच्च स्वर संकीर्तन करे परोपकारे ।**' माला के द्वारा नाम-जप करने पर तो केवल अपना ही कल्याण होता है, दूसरों को इससे कोई लाभ नहीं होता है, जबकि संकीर्तन करने पर उच्च स्वर से नाम का उच्चारण होता है तो इससे सभी जीवों का उद्धार होता है ।

'पशु पक्षी कीट भृंग बोलिते न पारे । शुनि लेय हरिनाम तारा सब तरे ॥'

पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े आदि जीव 'भगवन्नाम' का उच्चारण नहीं कर सकते हैं किन्तु जब संकीर्तन होता है तो नाम की ध्वनि वे भी श्रवण करते हैं और उसके प्रभाव से उनका भी उद्धार होता है, इसलिए जप से हजारों गुना महिमा कीर्तन की है और इसी कारण से श्रीबाबा सभी को भगवद् उपासना की वह विधि अपनाने को कहते हैं, जिससे अपने साथ ही समस्त जीवों का, समाज और देश का कल्याण हो ।

कोसी में गोमती गंगा के जीर्णोद्धार के बाद ब्रजयात्रा में नन्दगाँव के गोस्वामियों ने श्रीबाबा से वहाँ के कृष्णकुण्ड के जीर्णोद्धार करने की प्रार्थना की । श्रीबाबा ने उनके अनुरोध को स्वीकार किया और इसके लिए भी श्रीबाबा ने वहाँ अखण्ड कीर्तन का आयोजन करवाया । श्रीबाबा महाराज अपने पास पैसा रखते नहीं हैं, किसी से धन की याचना नहीं करते किन्तु बड़े ही आश्चर्य की बात है कि उनके द्वारा धाम सेवा के तथा अन्य भी समाज कल्याण के अत्यन्त महत्वपूर्ण

कार्य केवल नाम कीर्तन के प्रभाव से ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाते हैं । नन्दगाँव के गोस्वामियों के अनुरोध पर वहाँ के कृष्ण कुण्ड के जीर्णोद्धार के लिए भी श्रीबाबामहाराज के द्वारा कुण्ड के तट पर बने मन्दिर में अखण्ड कीर्तन की व्यवस्था की गयी और इसके लिए भी उन्होंने मान मन्दिर के साधुओं को कीर्तन करने के लिए नन्दगाँव भेजा । अखण्ड कीर्तन से पहले श्रीबाबा स्वयं नन्दगाँव पहुँचे और उन्होंने नन्दगाँव वासियों के साथ कीर्तन करते हुए नन्दगाँव की परिक्रमा की, परिक्रमा के बीच-बीच में श्रीबाबा ने वहाँ के लोगों को नाम कीर्तन की महिमा समझाई और सभी को प्रभात फेरी में जाने को कहा । श्रीबाबा के उद्बोधन का नन्दगाँववासियों पर बड़ा प्रभाव पड़ा और उन्होंने श्रीबाबा की बात मान करके प्रभात फेरी में जाना स्वीकार कर लिया और फिर तो नन्दगाँव में अलग-अलग थोकों (मोहल्लों) से छः-सात प्रभात फेरियाँ चलने लगीं । सभी को श्रीबाबा के द्वारा निःशुल्क ढोलक और माइक प्रदान किये गये । छः-सात थोकों से ब्रह्म मुहूर्त में विभिन्न प्रभात फेरी वाले दल ढोलक-माइक से कीर्तन करते हुए नन्दभवन में मंगला आरती में पधारते तो बहुत ही सुन्दर दृश्य उपस्थित होता था । नन्दभवन में वहाँ के ब्रजवासी बहुत देर तक ठाकुरजी के समक्ष नृत्य-गान किया करते थे । नन्दगाँव में अखण्ड कीर्तन के लिए साधुओं के दल के साथ मुझे भी जाना पड़ा था । श्रीबाबा ने कीर्तन के आरम्भ से पूर्व मन्दिर में मानगढ़ के साधुओं से कहा था कि एक-एक साधु बारह घंटे तक कीर्तन करे और उन्होंने नन्दगाँववासियों से यह भी कहा कि यहाँ अब ऐसा कीर्तन होगा जो आज तक नन्दगाँव में पहले कभी नहीं हुआ होगा । श्रीबाबा ने मानगढ़ के साधुओं को वहाँ भी कीर्तन करते हुए भिक्षा माँगने को कहा किन्तु नन्दगाँव के गोस्वामीगण श्रीबाबा से बहुत प्रेम करते हैं, उनका श्रीबाबा के साथ सख्य भाव का सम्बन्ध है, अतः उन्होंने बाबा से कहा कि हम लोग आपके साधुओं को यहाँ भिक्षा नहीं माँगने देंगे, उन सभी के लिए नन्दभवन से ही प्रतिदिन दोनों समय ठाकुरजी का प्रसाद भेजा जायेगा । मानगढ़ के साधुओं ने श्रीबाबा और गोस्वामीगण – दोनों की आज्ञा शिरोधार्य की, वे कीर्तन करते हुए भिक्षा ग्रहण करने भी जाते थे तथा नन्दभवन का प्रसाद भी ग्रहण करते थे । इस तरह श्रीबाबा महाराज की प्रेरणा से नन्दगाँव में कई महीनों तक अखण्ड कीर्तन चलता रहा । अखण्ड कीर्तन और छः-सात प्रभात फेरियों के कारण नन्दगाँव में चारों ओर भक्ति की धूम मच गयी । नन्दगाँव वास्तव में ही नन्दलाला का गाँव प्रतीत होने लगा । अखण्ड कीर्तन के प्रभाव से आगे चलकर कृष्ण कुण्ड का भी जीर्णोद्धार हो गया । यह सब श्रीबाबा महाराज की कृपा से ही सम्भव हो सका । जिस समय कृष्ण कुण्ड के लिए अखण्ड कीर्तन हो रहा था, उसी समय पावन सरोवर के क्षेत्र में रहने वाले नन्दगाँववासियों में भी जागृति आई और वे भी पावन सरोवर के पुनरुद्धार के बारे में सोचने लगे । पावन सरोवर नन्दगाँव का सबसे बड़ा सरोवर है और यह ब्रज के विशाल सरोवरों में से एक है । इसकी बहुत बड़ी महिमा है । पावन सरोवर के थोक में रहने वाले ब्रजवासी श्रीबाबा के पास मान मन्दिर में आये और उनसे कहा – 'महाराज ! ऐसी कृपा कीजिये जिससे कि हमारे पावन सरोवर का भी शोधन हो जाए ।' श्रीबाबा ने कहा कि पावन सरोवर तो बहुत बड़ा सरोवर है, उसके शोधन के लिए तो बहुत अधिक धन चाहिए और मैं पैसा रखता नहीं हूँ और न ही कोई मेरा शिष्य है किन्तु सबसे बड़ा धन है कृष्णनाम । कृष्णकुण्ड के निमित्त भी मान मन्दिर के साधु वहाँ अखण्ड कीर्तन कर रहे हैं । आप लोगों को मैं भौतिक धन तो नहीं दे सकता किन्तु मेरी आप लोगों से प्रार्थना है कि आप यदि अखण्ड कीर्तन नहीं कर सकते तो अपने थोक में ही भ्रमण करते हुए प्रतिदिन प्रभात फेरी करिए । इतना ही यदि आप आस्था के साथ कर लेंगे तो नन्दलाल की कृपा से आपके पावन सरोवर का पुनरुद्धार हो जायेगा । कुछ दिनों पूर्व ही रस मन्दिर में पण्डितजी की माताजी परम पूज्या श्रीमती यमुना देवी का निधन हुआ था, जिन्होंने रस मन्दिर में साधु-सन्तों और वैष्णव अतिथियों की भोजन सेवा प्रारम्भ की थी । उन्होंने अपना तन-मन-धन सेवा के प्रति ही समर्पित कर दिया था । उनके नित्य धाम गमन के कुछ दिन पूर्व श्रीबाबा उनसे मिलने गये थे तो उन्होंने अपने गोलोकवासी पति की पेन्शन के बीस हजार रुपये श्रीबाबा को देते हुए कहा था कि आप इन्हें किसी सेवा कार्य में व्यय कर दीजिये । श्रीबाबा ने उन्हीं के दिए हुए वे रुपये नन्दगाँव वासियों को पावन सरोवर के शोधन हेतु दे दिए और कहा कि इन्हें कुण्ड की सेवा में लगा देना और प्रभात फेरी करते रहो । इन ब्रजवासियों ने श्रीबाबा की आज्ञा

का पालन किया और निष्ठा के साथ प्रभात फेरी करते रहे और अन्त में श्रीबाबा की वाणी का ऐसा अमोघ प्रभाव हुआ कि अत्यधिक चमत्कारपूर्ण ढंग से पावन सरोवर का शोधन कार्य सम्पन्न हो गया । पावन सरोवर के थोक में रहने वाले सभी स्त्री-पुरुष हाथों में तसला-बाल्टी लेकर कीच को बाहर फेंकने लगे । श्रीबाबा महाराज भी मानगढ़ के साधुओं और ब्रजवासियों को लेकर इस परम पुनीत अवसर पर वहाँ पहुँचे और उन्होंने भी सबके साथ हाथों में तसला लेकर सरोवर की कीच को बाहर फेंका । बरसाने के वृषभानु कुण्ड के जीर्णोद्धार का भी असम्भव सा लगने वाला कार्य श्रीबाबा के द्वारा निष्पादित हुआ । श्रीराधारानी के पिता वृषभानुजी के द्वारा इस कुण्ड का निर्माण कराया गया था । पाँच हजार वर्ष पूर्व निर्मित यह कुण्ड कलिकाल के प्रभाव से बहुत प्रदूषित हो चुका था, कुण्ड के चारों ओर स्वार्थी लोगों के अवैध कब्जे हो गये थे तथा इस कुण्ड के साथ ही बना जलमहल भी खण्डहर बन चुका था । सरकार ने इस कुण्ड के शोधन का प्रयास किया किन्तु सफलता नहीं मिली । सरकारी प्रयास से कुण्ड का पानी बाहर निकाल दिया जाता था किन्तु इस कुण्ड में इतनी अधिक दलदल थी कि इसको साफ़ करना सम्भव नहीं हो सका । अन्त में श्रीबाबा ने यह पावन कार्य अपने हाथों में लिया किन्तु श्रीबाबा के पास कभी पैसा तो रहता नहीं, फिर भी उनके पास सबसे बड़ा धन है और वह है राधा रानी का नाम । इसी धन के बल पर उनके द्वारा अन्यों के लिए पूर्णतया असम्भव कार्य सम्भव हो जाते हैं । पूर्व की भाँति श्रीबाबा के द्वारा वृषभानु कुण्ड के तट पर बसे एक आश्रम में अखण्ड कीर्तन का आयोजन किया गया और इसमें भी श्रीबाबा की प्रेरणा से मान मन्दिर के साधुओं ने सहभागिता की । वृषभानु कुण्ड के निमित्त होने वाले अखण्ड कीर्तन में श्रीबाबा की कृपा से मुझे भी अवसर मिला । उन्हीं दिनों पुरुषोत्तम मास भी था और इस पवित्र माह में बहुत से ब्रजवासी दण्डवती परिक्रमा करते हैं । बहुत से भक्तों को दण्डवती परिक्रमा करते देखकर मान मन्दिर के कुछ साधु, जो वृषभानु कुण्ड के लिए अखण्ड कीर्तन कर रहे थे, वे भी कीर्तन करना छोड़कर दण्डवती परिक्रमा करने लगे । एक दिन जब श्रीबाबा ने उन्हें ऐसा करते देखा तो समझाया कि आप लोग जो कीर्तन कर रहे हैं, उसकी महिमा हजारों दण्डवती परिक्रमा से बढ़कर है । कलियुग में नाम कीर्तन से बड़ा दूसरा कोई भी साधन नहीं है । श्रीमद्भागवत और अन्य समस्त वैष्णव शास्त्रों में नामकीर्तन की अपार महिमा का वर्णन किया गया है । इसलिए आप लोग नाम कीर्तन को छोड़कर दण्डवती परिक्रमा जैसे कष्टसाध्य साधन को न करें । बाबाश्री की बात उन साधुओं को समझ में आ गयी और वे फिर से नाम कीर्तन की साधना में लग गये । कुण्ड का पानी निकाल दिया गया, बहुत बड़ी पॉपुलेन जे.सी.बी. मशीन कीच निकालने के लिए आई किन्तु वह इस कुण्ड के विशाल दलदल में फँस गयी और बड़ी कठिनाई से उसे बाहर निकाला गया, इस तरह वह मशीन असफल हो गयी तो दूसरी जे. सी. बी. मशीन को लाया गया, वह भी ठीक तरह कार्य नहीं कर सकी किन्तु श्रीबाबा की प्रेरणा से अखण्ड कीर्तन निरन्तर चलता रहा और तीसरी बार जो मशीन लायी गयी, उसके द्वारा वृषभानु कुण्ड का शोधन कार्य पूर्ण रूप से सफल हो गया । इसके साथ ही श्रीबाबा की प्रेरणा से वृषभानुकुण्ड पर बने जीर्ण-शीर्ण हो चुके जलमहल का भी जीर्णोद्धार हो गया ।

संत-कृपा से ही भक्ति सम्भव

श्रीसुशीलराकेशजी (श्रीबाबामहाराज के भान्जे) के बाबाश्री से सम्बन्धित संस्मरण (६/९/२०२३)

मेरी माँ, जो श्रीबाबाकी बड़ी दीदी लगती थीं, उनको बाबा छन्नो दीदी कहते थे, उनका नाम था श्रीमती ओमवती शर्मा । वे बाबा महाराज को 'राम' कहा करती थीं । नानीजी (बाबा की माताजी) तो उन्हें रमेश कहती थीं । हम लोग बाबा को 'राम' के नाम से ही जानते हैं । हमारी माताजी तीन बहनें थीं । पहली थीं मन्नो दीदी, उनका विवाह चरवा ग्राम में हुआ था । मेरे पैदा होने से पहले ही उनका निधन हो चुका था । वे मेरी बड़ी मौसी थीं, उनके तीन पुत्र थे । कुँवरजी

बीच के पुत्र थे । हमारी माँ छन्नो देवी का मैं सबसे बड़ा पुत्र हूँ । दूसरे भाई हैं हरिओम, सबसे छोटे भाई हैं गोपाल । मेरी माँ मामाजी (बाबा) को बहुत याद करती रहती थीं । मामाजी भी उनको बहुत याद करते थे । वे मामाजी के पास बरसाना आना बहुत चाहती थीं किन्तु समस्या यह थी कि पतिदेव को छोड़कर कहाँ जाएँ, वे अकेले पड़ जायेंगे और आगे चलकर पिताजी की मृत्यु होने के बाद वे बीमार हो गयीं । बाबा महाराज ने मेरे पास एक पत्र लिखा कि दीदी को मेरे पास बरसाना भेज दो । मैंने बाबा को जवाब लिखा कि अब उनकी ऐसी अवस्था हो गयी है कि चाहकर भी आपके पास नहीं भेज सकता हूँ । श्रीबाबा को मेरी बात पर विश्वास नहीं हुआ और उन्होंने माँ को लाने के लिए दो व्यक्तियों को हमारे घर भेजा किन्तु माताजी को लकवा मार गया था, मेरे छोटे भाई उनकी देखभाल करते थे । ऐसी स्थिति में माताजी को भेजा नहीं जा सकता था । श्रीबाबा को इस बात का बड़ा दुःख हुआ । बाबा मेरी माताजी को बहुत मानते थे । उन्हें कभी-कभी पत्र लिखा करते थे । मैं कन्नौज में अर्थशास्त्र का प्रोफ़ेसर था, छः घंटे तक कॉलेज में पढ़ाता था, अतः मेरी भी व्यस्तता बहुत बढ़ गयी थी ।

पहली बार मैं लगभग १९७५-७६ में बरसाना आया था । उस समय नानीजी (बाबा की माताजी) यहीं रहती थीं और मौसीजी (बाबा की दीदी) भी यहीं रह रही थीं । जब मैं बरसाना आया और लोगों से गह्वर वन जाने का रास्ता पूछा तो उन्होंने कहा कि साँकरी खोर से होकर चले जाओ । साँकरी खोर का रास्ता तो बहुत पतला है । वहाँ एक पहाड़ काला है तो दूसरा थोड़ा सफ़ेद है । जहाँ चिकसौली गाँव की ओर रास्ता जाता है, मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि वहाँ एक जलाशय है । मेरे साथ दो व्यक्ति और भी थे, जलाशय का अनुभव होने पर मैं सोचने लगा कि अब यहाँ से गह्वर वन हम लोग कैसे जायेंगे ? हम लोग वहाँ से लौटने लगे और कहने लगे कि चलो, अब दूसरा रास्ता पूछना चाहिये । उसी समय मैंने देखा कि जो काला पहाड़ था, उधर से तीन छोटे बालक दौड़ते हुए हमारे पास आये और कहने लगे – 'आप लोगों को कहाँ जाना है ?' मैंने कहा कि हमको मान मन्दिर में रमेश बाबाजी के पास जाना है लेकिन यहाँ से आगे जाने का रास्ता ही नहीं समझ में आ रहा है । उन बच्चों ने कहा – 'हमारे साथ चलिए ।' ऐसा कहकर उन बच्चों ने हमारा सामान भी उठा लिया । हम लोग बच्चों के पीछे चलने लगे । आगे चले तो देखा कि जिसको हम लोग जलाशय समझ रहे थे, वहाँ तो बड़ा-सा रासमण्डल था । वे बच्चे हम लोगों को गह्वर वन में बाबा की कुटी पर ले आये और बोले कि अन्दर चलकर देखते हैं कि महाराजजी भीतर तो नहीं हैं ? बच्चे अन्दर गये तो देखा कि बाबा भोजन कर रहे थे और उनकी माताजी भी वहीँ थीं । बच्चों ने बाबा से कहा कि बाहर से कुछ लोग आये हैं, वे आपसे मिलना चाहते हैं । नानीजी ने तो मुझे बचपन में देखा था किन्तु इस समय मेरी आयु ३२ वर्ष थी । वे मुझे देखते ही पहचान गयीं और चारपाई से खड़े होकर मुझे अपने गले से लगा लिया तथा रोने लगीं । मौसी (दीदीजी) ऊपर के कमरे में थीं, उन्हें पता चला तो वे भी नीचे आ गयीं । उस समय बाबा का रात का कीर्तन समाप्त हो गया था और हम लोग बाबा के साथ मान मन्दिर चले गये । श्रीबाबा की आयु उस समय लगभग ४५ वर्ष रही होगी, वे हृष्ट-पुष्ट थे और शास्त्रीय संगीत में तो उनका जन्म सिद्ध अधिकार था क्योंकि उन्होंने प्रयाग संगीत समिति से प्रभाकर किया था । जब मैं यहाँ बरसाना आया था तो एक बार श्रीबाबा के साथ हम लोग बठैन गाँव भी गये थे । वहाँ के ब्रजवासियों ने बाबा से कुछ गाने का अनुरोध किया तो उन्होंने शास्त्रीय गीत गाया, उसे मैंने पहली बार सुना । दो घंटे तक वह कार्यक्रम चला । बाबा की आवाज इतनी मधुर थी, मुझे ऐसा लगा कि स्वर्ग लोक में जो आनन्द मिलता है, वह मुझे बठैन गाँव में मिला । बाबा तो १६-१७ वर्ष की आयु में ही घर छोड़कर यहाँ आ गये थे तो वहाँ मुझे उनका गान सुनने का अवसर नहीं मिला था, यहाँ पहली बार श्रीबाबा का गान सुनकर तो मैं मन्त्र मुग्ध सा हो गया था । श्रीजी ने बाबा के शरीर में अपना अद्भुत रस उड़ेल दिया है । उस समय उनका शरीर इतना मजबूत था कि यदि किसी को हाथ से मार दें तो तुरन्त वह नीचे गिर जाता । मैं तो राधारानी का भक्त नहीं हूँ किन्तु बाबा महाराज के कारण मेरा सारा ध्यान राधारानी की ओर चला जाता है ।

भक्ति का मूल है 'दैन्य' । सबसे पहले चैतन्य महाप्रभु जी ने यही शिक्षा दी – तिनका से भी छोटे बनो फिर और बातें स्वयमेव आ जायेंगी – सहिष्णुता, अमानिता, मानदेनता, भगवान् का कीर्तन आदि ।

नानीजी (बाबा की माताजी) जिस समय प्रयाग में थीं तो हम लोग भी उन्हीं के पास रहते थे । मकान के आगे वाले हिस्से में हम लोग रहते थे और पीछे वाले हिस्से में नानीजी रहती थीं । उस समय मेरी आयु १२-१३ वर्ष थी । माताजी पूजा करती थीं तो उन्होंने हमें बहुत सी रामायण की चौपाइयाँ-दोहे तथा उपासना के मन्त्र सिखा दिए थे । मैं देखा करता था कि नानीजी सुबह उठकर स्नान आदि करके एक कमरे को बन्द करके उसी में पूजा करती थीं । उस समय वे भगवान् के आगे रुदन किया करती थीं । मैं जब उनका रुदन सुनता था तो सोचता था कि नानीजी पूजा के समय रोती क्यों हैं, उन्हें तो रामायण का पाठ करना चाहिए, शिव और विष्णु भगवान् की स्तुति का पाठ करना चाहिये । वे इतनी तेज रोया करती थीं कि जहाँ हम लोग रहते थे, वहाँ तक उनके रोने की आवाज सुनायी देती थी । एक दिन मैंने हिम्मत करके उनसे पूछा कि आप पूजा के समय एक घंटे तक इतना रोती क्यों हैं ? उन्होंने अपने रोने का कारण तो नहीं बताया, केवल इतना ही कहा कि मैं अपने परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ । बाद में मुझे पता चल गया कि वे बाबा को याद करके रोती थीं कि हे भगवान् ! मेरा बेटा मुझे छोड़कर कहाँ चला गया है ? वे रोकर भगवान् से प्रार्थना करती थीं कि मेरा बेटा मुझे वापस दिला दो । बाबा तीन बार घर से भाग चुके थे । एक बार जब वे भाग गये तो मौसीजी (दीदीजी) और मेरी माताजी प्रयाग में उन्हें ढूँढकर वापस घर ले आयीं और कहा – 'कोई बात नहीं, तुम्हारा विवाह नहीं करेंगे, तुम घर में ही रहो ।' उस समय बाबा उनकी बात मान गये और घर लौट आये । कुछ समय घर में रहने के बाद एक दिन पुनः वे घर से भाग गये । उस समय प्रयाग इतना बड़ा नहीं था, जितना कि आज है, तब प्रयाग छोटा सा ही शहर था । पूरे शहर में बाबा की खोज की गयी, फिर पता चला कि अमुक स्थान पर बाबा हैं तो पुनः मौसीजी और मेरी माँ उनको समझा-बुझाकर घर ले आयीं । उनसे कहा कि तुमको जैसे भी रहना हो, घर में रहो, तुमसे विवाह की बात अब कभी नहीं करेंगे, घर में ही रहकर तुम भजन-कीर्तन करो । हम लोग तुम्हारे ऊपर किसी तरह का नियन्त्रण नहीं रखेंगी, अब तुम घर चलो । तीसरी बार जब बाबा घर से भागे, फिर घर नहीं लौटे । सब जगह उनकी खोज की गयी किन्तु कहीं भी उनका पता नहीं चला । मेरा ऐसा अनुमान है कि उस समय बाबा ने पूरे भारत का पैदल ही भ्रमण किया था । एक दिन बाबा घर आ गये और रात को बारह बजे उन्होंने दरवाजे की कुण्डी खटखटायी । मेरी माँ ने जाकर दरवाजा खोला और बाबा को देखकर वे बड़े जोर से चिल्लायीं – 'अम्मा ! देखो राम आ गया ।' हम सभी लोग जग गये । मौसी (दीदीजी) का घर पास में ही था, उन्हें पता चला तो वे भी भागती चली आयीं । सभी लोग रोने लगे, नानीजी तो बहुत बुरी तरह रोने लगीं । मैंने यह सब दृश्य अपनी आँखों से देखा था । बाबा ने सबसे कहा कि तुम लोग रो मत, नहीं तो मैं अभी यहाँ से चला जाऊँगा । उनके ऐसा कहने पर सभी लोग चुप हो गये । उस समय बाबा के पाँवों में बड़े-बड़े छाले हो गये थे । मुझे तो बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि इतने बड़े छालों के कारण बाबा चलते कैसे होंगे ? बाबा ने यह भी कहा कि मैं दो-तीन दिन तक घर में रहूँगा, उसके बाद ब्रज में चला जाऊँगा । जिसको भी मुझसे मिलना हो, ब्रज में आकर मिल ले । मैं ब्रज को छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगा । नानीजी बाबा के चले जाने के बाद इसीलिए उनको याद करके भगवान् के सामने रोया करती थीं और प्रार्थना करती थीं कि मेरा बेटा मुझे वापस मिल जाए । जब तक वे प्रयाग में रहीं, उनका रोना बन्द नहीं हुआ और प्रतिदिन रोती रहती थीं । जब बाबा घर से चले गये थे तो मैं उस समय छः-सात वर्ष का ही था । बीच में जब वे आते-जाते रहे तो वह घटना मुझे याद है । जब बाबा प्रयाग में रहते थे तो बीच-बीच में वे कृपालुजी के सत्संग में जाया करते थे ।

जब बाबा छः साल के थे, तभी नानाजी (बाबा के पिताजी) का देहान्त हो गया था । वे बहुत बड़े ज्योतिषी थे और मनुष्य के हाथ तो क्या, पैर की रेखाओं को देखकर उसका भविष्य बता देते थे । उन्हें बाबा के विरक्त होने के बारे में पहले ही पता चल गया था किन्तु उन्होंने नानीजी को इस बारे में कुछ नहीं कहा था । मदनमोहन मालवीयजी नानाजी के मित्र थे, वे भी बहुत बड़े विद्वान् और ज्योतिषी थे । जब बाबा बहुत छोटे ही थे तो एकबार नानाजी नानी के साथ मालवीयजी के घर गये थे तो उन्होंने बाबा को देखते ही नानाजी से कहा कि इस बालक के भाग्य में तो वैराग्य लिखा है । वहाँ पर

नानीजी को पता चल गया था कि मेरा बेटा वैरागी हो जाएगा । घर जाने पर उन्होंने नानाजी से कहा कि आप भी तो ज्योतिषी हैं, रमेश के वैरागी होने के बारे में आपको भी तो पता होगा, फिर यह बात आपने मुझे क्यों नहीं बतायी ? नानाजी ने कहा कि मैंने तुम्हें इसलिए नहीं बताया क्योंकि तुम्हें दुःख होगा । आगे चलकर नानीजी ऐसे उपाय करने लगीं, जिससे कि मेरे पुत्र की संसार में आसक्ति हो और इसे वैराग्य न हो जाए । वे बाबा के प्रत्येक कार्य का निरीक्षण करती रहती थीं कि यह क्या करता है, किसका संग करता है, कहाँ जाता है ? नानीजी बाबा को बचपन से ही बड़े लाड़-प्यार से रखती थीं, कभी उन्हें खिलौना देतीं, कभी टॉफी देतीं, कभी उन्हें घुमाने ले जातीं, ऐसा उपाय करतीं जिससे कि बेटे का संसार के प्रति आकर्षण बढ़े किन्तु बाबा का मन तो बचपन से ही संसार के प्रति आसक्त नहीं हुआ ।

जब मैं बाबा के दर्शन करने आया तो यहाँ तीन दिन तक रुका, फिर चला गया । उसके बाद भी यहाँ कई बार आता रहा । अबकी बार बाबा ने मुझसे कहा कि देखो, अब मेरा समय बहुत कम रह गया है, तुम मेरी प्रिय दीदी के पुत्र हो, अतः मैं चाहता हूँ कि तुम यहीं बरसाना में रहो ।

बाबा मुझसे १५ साल बड़े हैं । उनकी दीदी को शास्त्रीय संगीत का अच्छा ज्ञान था । दीदीजी की तीन पुत्रियाँ और एक पुत्र हैं, वे सभी संगीत में कुशल हैं । दीदी ने ही बचपन में बाबा को हारमोनियम बजाना सिखाया था, फिर बाबा की कुशल प्रतिभा को देखकर दीदी ने बाबा को प्रयाग संगीत समिति में प्रवेश दिलाया । मैं जब घर में था तो छोटा था किन्तु सुनता था कि बाबा संगीत में प्रभाकर कर रहे हैं, बी.ए. कर रहे हैं । मैं तब छोटा था, अधिक ज्ञान नहीं था । बाबा से अधिक कुछ पूछता तो वे डाँट देते थे तो मैं डर जाता था । हालाँकि बाबा का सब कुछ मधुर है, उनका डाँटना भी प्रेम भरा और मधुर था । उस समय बहुत छोटे होने के कारण बाबा के बारे में मुझे बहुत ही कम स्मरण है । इतना याद है कि सुबह बाबा इलाहादाबाद यूनिवर्सिटी में पढ़ने के लिए चले जाते थे, जब वहाँ से लौटकर आते थे तो शाम को छत पर एक कमरे में चार-पाँच घंटे तक संगीत का अभ्यास करते थे । मौसी (दीदी) भी उनको सिखाती रहती थीं कि रमेश ! ऐसा करो, ऐसा करो । मेरा तो विश्वास है कि बिना महिलाओं के सहयोग के कोई राम नहीं बन सकता है । नानीजी (बाबा की माताजी) ने पूर्व जन्म में अथवा इस जन्म में कोई बहुत बड़ी तपस्या की थी, उसी का परिणाम है कि संसार में बाबा जैसे महापुरुष प्रकट हुए ।

मैं जब यहाँ आता था तो प्रभात फेरी भी चलती थी । समाज के जागरण का श्रीबाबा ने यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम आरम्भ किया है । उस समय गह्वरवन भी कट रहा था, इसको भी श्रीबाबा ने ही बचाया ।

प्रश्न - भारत के अन्य सन्तों में और श्रीबाबा में आपको क्या अन्तर दिखाई देता है, श्रीबाबा में आपको क्या विशेषता दिखायी देती है ?

उत्तर - त्याग तो बहुत से सन्तों ने किया किन्तु मुझे ऐसा लगता है कि उन्होंने त्याग केवल अपने लिए किया किन्तु श्रीबाबा ने परोपकार के लिए त्याग किया । उन्होंने एक दाने को भी कभी अपना नहीं माना । वृन्दावन आदि में मैंने बहुत से राधा-कृष्ण के मन्दिर देखे, कहीं दस बीघा में, कहीं पचास बीघा में तो कहीं सौ बीघा में मन्दिर बने हुए हैं किन्तु कहीं कुछ नहीं है क्योंकि उन मन्दिरों की मूर्तियाँ सिद्ध नहीं हैं, मान मन्दिर की मूर्ति सिद्ध है और यह सिद्ध है श्री बाबा की निष्काम आराधना के कारण । अन्य मन्दिरों में लोगों से दान माँगा जाता है, धन के लिए लोगों को आजीवन सदस्य बनाया जाता है । मान मन्दिर की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि यहाँ हर सेवा निष्काम होती है । अन्य सन्तों में और बाबा में एक प्रमुख अन्तर यह है कि श्रीबाबा ने आज तक किसी को अपना 'शिष्य-शिष्या' नहीं बनाया जबकि अन्य सन्त 'शिष्य-शिष्या' बनाने के लिए लालायित रहते हैं । श्रीबाबा ने आज तक अपने पास एक पैसा भी नहीं रखा किन्तु अन्य सन्त श्रीबाबा की तरह धन का त्याग नहीं कर सके हैं । श्रीबाबा की यह एक ऐसी विशेषता है, जो उन्हें अन्य सन्तों से विशिष्ट बनाती है, उन्हें सबसे अलग बनाती है । श्रीबाबा की एक अन्य सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने बालिकाओं का इतना बड़ा समूह बनाकर उन्हें भक्ति के मार्ग पर प्रशस्त किया है, उन्हें सुरक्षा प्रदान की है, ऐसा भारत के किसी भी

सन्त-महात्मा ने नहीं किया है । आज वृन्दावन में और देश में सभी जगह लडकियाँ सुरक्षित नहीं हैं, सभी जगह उनका शोषण ही हो रहा है । श्रीबाबा महाराज भारत के अकेले ऐसे सन्त हैं, जिन्होंने नारी समाज को सुरक्षा प्रदान की है । मानमन्दिर में सौ से भी अधिक कन्यायें पूर्ण सुरक्षित रहते हुए निष्काम भक्ति की साधना में अपने जीवन को समर्पित करते हुए अत्यन्त ही पवित्रता के साथ निवास कर रही हैं । यह सब श्रीबाबा की ही कृपा से सम्भव हो सका है ।

भक्तिमय भूमि 'भारतवर्ष'

श्रीभगवद्भक्ति व राष्ट्रभक्ति का पारस्परिक अभिन्न सम्बन्ध है । एक सच्चे संत-भक्त में अपने देश के प्रति प्रेम अवश्य होता है । भारतदेश ही सच्चे साधन की भूमि है, जहाँ पर भक्तिमय साधन करके जीव सहज ही श्रीभगवान् की प्राप्ति कर लेता है । अन्यत्र (विदेशों में) सांसारिक विषयभोग व ऐश्वर्य की प्रचुरता होने के कारण विशुद्ध भक्ति के साधन व साध्य की प्राप्ति अत्यन्त कठिन हो जाती है । इसलिए वास्तविक भजन-आराधन की भूमि भारतवर्ष ही है, यहाँ की आराधना-शक्ति से साक्षात् श्रीधाम-धामी व संतजनों के अवतार इसी भूमि में ही होते हैं । भारतवर्ष समग्र विश्व का हृदय है, यहाँ जन्म लेने के लिए देवगण भी लालायित रहते हैं । **"महिमा भारतवर्ष की सुन देवता लुभायें । हौंय अनेक अवतार जहाँ हम क्यों नहिं जन्मे जायँ ॥"** इसमें ब्रज की गरिमा तो असमोर्ध्व है । जैसे शरीर में प्राण का महत्त्व होता है, बिना प्राण के वह निष्प्राण हो जाता है उसी प्रकार ब्रज विश्व का प्राण है । ब्रज-संस्कृति के उत्थान व विकास से ही विश्व का मंगल सम्भव है । 'ब्रज-संस्कृति' भारतीय संस्कृति की आत्मस्वरूपा है, इसी कारण भारतवर्ष विशेष महिमान्वित व गौरवान्वित होने से विश्वगुरु है । जब से श्रीकृष्ण ने इस ब्रजभूमि को अपने जन्म से धन्य किया, लक्ष्मीजी ने तो तभी से इसे अपना निवास-स्थल सदा-सदा के लिए बना लिया । **"जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि ।"** अन्य तीर्थ तो इसलिए धन्य हैं कि भगवान् उन तीर्थों में नंगे पाँव चले हैं परन्तु ब्रज की महिमा का कौंन वर्णन कर सकता है जहाँ ब्रजरज का स्वयं श्रीकृष्ण ने अपने श्रीमुख से आस्वादन किया है । ब्रजमंडल की परिधि ८४ कोस की मानी गई है, इसमें भी चार स्थल प्रमुख हैं, ऐसी ब्रज रसिकों की मान्यता है – "**ब्रज चौरासी कोस में चार गाँव निज धाम ।**
वृन्दावन अरु मधुपुरी बरसानों नंदगाँव ॥"

१५ अगस्त १९४७ को हमारा देश भारतवर्ष विदेशी आक्रान्ताओं के गुलामी की जंजीरों से स्वतंत्र हुआ था, तब से ७७ (ससत्तर) वर्ष हो चुके हैं, ७८ (अठहत्तर) वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया गया है । 'स्वतंत्रता दिवस' अर्थात् अपने स्वरूप व अपने देश के गौरव के स्वरूप को समझना ही सच्चा 'स्वतंत्रता दिवस' है । वास्तव में 'स्वतंत्रता दिवस' मनाने का सच्चा स्वरूप तो यही है कि हम अपनी संस्कृति व संस्कारों को समझें तथा जिन संत-महापुरुषों ने जीवन पर्यन्त इसकी संरक्षा का दायित्व निभाते हुए अपने प्राणों तक का बलिदान कर दिया; उन महान विभूतियों की जीवनी को याद कर अपने राष्ट्र की महिमा को जानें और इसके संरक्षण-संवर्द्धन के लिए सतत् दृढ संकल्पित रहें ।

देश-भक्तिमय गीत

<u>तर्ज - बाबाश्री कृत रसिया 'ब्रज में फिर प्रेम भरी प्यारी, मुरली की तान सुना देना...' पर आधारित</u>

श्रीरामकृष्ण की जन्मभूमि, हे भारतमाता ! नमन-नमन ।
है सत्य सनातन भक्तिभूमि, करती दुष्टों का दमन-शमन ॥
श्रीसंत भक्त करते आराधन,
हों धन्य-धन्य कण-कण जन-जन,
राधा-आराधन रस बरसै, हम करते शत-शत नमन-नमन ।

है सत्प्रयास सत्पुरुषों का,
बलिदान है अमर शहीदों का,
गौरव गाथा गाकर उनकी, करते हैं हम सब नमन-नमन ।
है अविनाशी भारत-संस्कृति,
है सरल-सरस श्रीब्रज-संस्कृति,

ये कभी न मिटती रहे सदा, हम करते जिसका मनन-मनन ।
है शुद्ध सत्त्वमय वस्तु-वेश,
सबकी जननी भाषा स्वदेश,
संस्कृत-हिन्दी व ब्रजभाषा, रसमय है जिसकी रटन-रटन ।
है विश्वगुरु ये भारत देश,
देता सबको सच्चा उपदेश,
हे मातृभूमि ! हिन्दू जागो !! करके स्वदेश-महिमा-चिन्तन ॥

कल्याणकारी तीर्थ 'गौ-भूमि'

(१) जो मनुष्य गायों को चरने से रोकता है, उनके पितृगण पतनोन्मुख हो जाते हैं । जो मनुष्य गायों को लाठी से मारते हैं, उनको बिना हाथ के होकर यमपुरी में जाना पड़ता है । (पद्मपुराण, पाताल खण्ड, अध्याय - १८)

(२) गायों के बीच में जूते पहनकर अथवा किसी वाहन में सवार होकर न जायें । गौ-वत्सों को कभी लाँघकर न जायें । स्वप्न में भी गायों को ताड़ने (मारने-पीटने) या उनके प्रति क्रोध दिखाने का भाव मन में न आने दें । (ब्रह्मपुराण)

(३) यदि आप दूसरों की गायों को स्वयं भोजन करने से पूर्व एक वर्ष तक प्रतिदिन घास खिलायें तो आपकी समस्त इच्छाएँ पूरी हो जायेंगी । जब गायें स्वच्छन्दतापूर्वक विचरण कर रही हों अथवा उपद्रवशून्य स्थान पर बैठी हों, तब उन्हें उद्वेग में न डालें । गायों की प्रदक्षिणा करें, उनके बीच से होकर न निकलें, उन्हें लात न मारें, सदा उनके बायीं ओर चलें ।
(महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय – ६९)

(४) जो प्यासी गायों को पानी पीने से रोकता है, वह ब्रह्मघातक है । (महाभारत, आश्व. वैष्णव.)

(५) गायों के साथ कभी द्रोह न करें, सदा उन्हें सुख पहुँचाएँ तथा उनका यथोचित सत्कार करें, नमस्कार आदि के द्वारा उनका पूजन करते रहें । (महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय – ८१/३४)

(६) जब गाय बछड़े को दूध पिला रही हो, तो उसे न रोकें । (याज्ञवल्क्य स्मृति १/१४०)

(७) गायों, ब्राह्मण, राजा और दृष्टिहीन व्यक्तियों को निकल जाने के लिए रास्ता छोड़ दें । (बौधायन स्मृति, स्नातक व्रतानि - ३०)

(८) जो ग्वाला स्वयं गाय को मारे या किसी से मरवाये, उसे प्राणदण्ड दिया जाए । (कौटिलीय अर्थशास्त्र, गोऽध्यक्ष प्रकरण)

(९) दुष्ट व्यक्तियों का एक लक्षण यह है कि वे अकारण गायों को सताते हैं । (जरथुश्तीय गाथाएँ, यश्न ३२/१२)

(१०) जहाँ पर गायें रहती हैं, उस स्थान को तीर्थभूमि कहा गया है, वहाँ पर प्राणों को छोड़ने वाले मनुष्य शीघ्र ही मुक्त हो (भवबन्धन से छूट) जाते हैं – गावस्तिष्ठन्ति यत्रैव यत्तीर्थं परिकीर्तितम् ।
प्राणांस्त्यक्त्वा नरस्तत्र सद्यो मुक्तो भवेद् ध्रुवम् ॥ (ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड – २१/९५)

ब्रजरक्षा व गौरक्षा से ही देश व विश्व की सुरक्षा होगी । गौ-खिरक को ही ब्रज कहा गया । ब्रज का एक नाम गोकुल भी है इस गोकुल ने ही कन्हैया को गोपाल बनाया, गोविन्द बनाया । गौ चर्चा ही ब्रज चर्चा का पूरक है अतएव इसकी अतिशयावश्यक चर्चा यहाँ की जा रही है । **"यत्र गावो भूरिश्रृंगाः अयासः"** (ऋग्वेद.१/१५) जहाँ गाय हैं, वहीं ब्रज है । **"व्रजन्ति गावो यस्मिन् स व्रजः ।"** भूमि के सप्त आधार स्तम्भों में से प्रथम स्तम्भ है – **गौ माता ।**

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभि: सत्यवादिभि: । अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ॥ (स्कन्दपुराण ४/२/९०)

इस भूमि की आधार है – श्री गौ माता । जानते हो, इस आधार पर प्रथम प्रहार किया था कलियुग ने । उस कलियुग का दमन तो कर दिया श्री परीक्षित जी ने किन्तु अब कलियुग के अनेकों बाप-दादा आ गए हैं । जो इस आधार स्तम्भ को विदीर्ण करने के लिए निर्ममता से अघ्न्या(अवध्या) गौ का वंदन के स्थान पर हनन कर रहे हैं ।

श्री कृष्ण अवतार से न केवल भारत की प्रत्युत सम्पूर्ण विश्व की रक्षा हुई थी । गोपियाँ कहती हैं –

व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम् । त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम् ॥
(श्रीभागवतजी १०/३१/१८) कृष्ण ! तुम्हारे आने से विश्व मंगल हुआ । कैसे? तुमने गौ सेवा की । गोपालक ही गोपाल का बालक है । सम्पूर्ण संसार जानता है कि गवामृत से शुद्ध-बुद्धि, पवित्र-चरित्र का निर्माण होता है । बुद्धि यदि शुद्ध है तो

राग-द्वेष, कलह-विषाद स्वतः संसार से नष्ट हो जाए, प्रेम का संचार हो जाए । यदि आज अनाद्या अवध्या गौ का वध बंद हो जाए तो भारतवर्ष सशक्त व स्वराट् बन जाए । गो-गोपाल के सेवक का कदापि कोई अभद्र नहीं हो सकता है ।
किसने नहीं की गौ सेवा ? विधि-हरि-हर ने स्वयं गौ-स्तवन किया । महदपराध होने पर ऋषियों से शप्त होकर शिवजी ने गोलोक जाकर सुरभि का स्तवन किया । सुरभि ने स्नेह पूर्वक शिवजी को गर्भस्थ कर लिया । देवगणों ने ढूँढते हुए गोलोक में स्थित सुरभि से प्रार्थना की, तब सुरभि ने एक वत्स को जन्म दिया जो नीलवृषभ बोले गए । यही पंचानन थे । श्रीराम जी के जन्म के पूर्व महाराज दशरथ जी ने दस लाख गायों का दान किया ।
"गवां शत सहस्राणि दश तेभ्यो ददौ नृप" **(वाल्मीकि रामायण १/१४/५०)**
इस गौदान से अग्निदेव यज्ञ में प्रसाद लेकर प्रकट हुए । राम जन्मावतार के बाद पुन: महाराज दशरथ जी ने बहुसंख्यक गौदान किया । **"हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह ।"(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड - १९३)**

परमानन्दकारी 'संत-पदार्पण'

श्रीमाधव पहलवान जी (मुखराई) की बाबाश्री के बारे में भावाभिव्यक्ति

एक बार मैं अपने गाँव मुखराई में शाम को पाँच बजे घर में व्यायाम कर रहा था । दरवाजे पर किसी की आवाज सुनायी दी तो मैंने दरवाजा खोलकर देखा तो बाबा वहाँ बैठे थे । वे घुटने तक की गाती पहने थे । मेरी और बाबा की आयु एक बराबर है । उस समय मैं लगभग १८ वर्ष का था और बाबा की भी आयु इतनी ही थी । मैंने बाबा से पूछा कि आप कहाँ से आये हैं ? बाबा ने कहा कि तुम पहले अपनी कसरत पूरी कर लो । मैंने कहा कि बाबा ! कसरत तो पीछे हो जायेगी । पहले यह बताइए कि आप कहाँ से आये हैं ? उन्होंने कहा कि मैं बरसाने में रहता हूँ और रहने वाला प्रयाग का हूँ । मैं मुखराई में राधारानी की नानी के दर्शन करने आया हूँ । बाबा की बात सुनकर मैंने पहले उन्हें दूध पीने को दिया, फिर उन्हें मन्दिर में राधारानी की नानी के दर्शन कराने ले गया । दर्शन करके बाबा को बड़ा आनन्द मिला । बाबा ने मुझसे कहा – 'पहलवान ! मैं तुम्हारे गाँव में दो-चार दिन रुकना चाहता हूँ ।' मैंने उनसे कहा कि दो-चार दिन क्या, दो-चार महीने या जितने भी दिन आप रुकना चाहो, रुको । बाबा ने पूछा कि रोटी मिल जायेगी ? उस समय मैंने घर में ईंट का चूल्हा बना रखा था । मैंने और बाबा, दोनों ने मिलकर अपने हाथों से रोटी और सब्जी बनायी । उस समय मैं घर में अकेला ही रहता था । बाबा महाराज दस-ग्यारह दिन मेरे गाँव में रुककर चले आये । पाँच-छः साल बाद मैं बाबा के दर्शन करने बरसाने गया । उस समय गह्वर वन में कथा होने जा रही थी । जब मैं आया तो बाबा व्यासासन पर बैठकर भागवत को खोल रहे थे । मैंने बाबा को प्रणाम किया । बाबा ने मुझसे पूछा कि तुम कहाँ रहते हो ? मैंने कहा – 'बाबा ! अपना नाम बताऊँ कि अपने गाँव का नाम बताऊँ ?' बाबा ने कहा – 'कुछ भी बताओ ।' मैंने कहा – 'मैं मुखराई में रहता हूँ ।' इतना सुनते ही बाबा आसन से उतरकर मुझसे गले मिले । उन्होंने कहा – 'पहलवान ! तुमने बहुत अच्छा किया, जो यहाँ आ गये । यहाँ आते रहा करो । यहीं आ जाओ और भजन करो ।' मैं जब भी मान मन्दिर आता तो बाबा यही बात कहते थे कि यहीं आ जाओ । २५-३० साल पहले मेरी पत्नी की मृत्यु हो गयी । जब बाबा को पता चला तो उन्होंने मुझसे कहा कि अब तुम्हारी पत्नी की मृत्यु हो गयी है और तुम्हारे बच्चे भी बड़े हो गये हैं, अब तुम मान मन्दिर चले आओ । मैं बाबा से कहता रहा कि आ जाऊँगा किन्तु समय ने मुझे नहीं आने दिया । हर साल ब्रजयात्रा मुखराई में जाती थी तो बाबा मुझसे मिलते थे और यही बात कहते थे – 'पहलवान ! अब मान मन्दिर में आ जाओ ।' इस बार की यात्रा का पड़ाव मुखराई में हुआ तो बाबा मुझसे मिलने मेरे घर आये और कहा कि यह यात्रा जब वापस बरसाना पहुँच जाए तो तुम दो-तीन दिन में मान मन्दिर आ जाना । बाबा की आज्ञा का पालन करते हुए मैं यात्रा की समाप्ति के

बाद मान मन्दिर में आ गया । बाबा बड़े प्रसन्न हुए और मैं भी बड़ा प्रसन्न हुआ । बाबा ने यहाँ सबसे बोल दिया है कि यह मेरा बचपन का मित्र है, सब लोग इसका ध्यान रखना, इसको कोई कष्ट न हो । सभी लोग मेरा बड़ा सम्मान करते हैं और मेरी सुविधा का बड़ा ध्यान रखते हैं । एक दिन तो पद गान समाप्त होने के बाद बाबा सीधे मेरे कमरे में मुझसे ही मिलने आये । मैंने उनसे कहा – 'बाबा ! आपने तो कमाल कर दिया । आप स्वयं मुझसे मिलने मत आया करो, मुझे अपने कमरे में बुला लिया करो ।' बाबा जब भी मुझसे मिलते हैं तो यही पूछते हैं कि तुम्हें यहाँ कोई कष्ट तो नहीं है ? मैं कहता हूँ कि मुझे तो यहाँ कोई कष्ट नहीं है । बढ़िया भोजन मिलता है, गाय का दूध पीने को मिलता है । सभी लोग मेरा सम्मान करते हैं । कल मेरे बेटे का फोन आया था, वह कह रहा था कि घर कब आओगे ? मैंने उससे कहा कि मुझे तो यहाँ बड़ा आराम मिल रहा है । यहाँ मेरी जैसी सेवा हो रही है, ऐसी सेवा तो घर में भी नहीं हो सकती है ।

मेरे मन तो अब ऐसी भावना होती है कि बाबा के जितने भी प्रेमी भक्त हैं, वे सभी अपनी एक घंटे की आयु बाबा को अर्पित कर दें तो उनकी आयु बहुत अधिक बढ़ जायेगी । मेरा तो ऐसा विचार है कि ये बाबा नहीं हैं, ये तो कोई अवतार हैं । बाबा ने जैसी तपस्या की है, वैसा तप अन्य किसी सन्त ने नहीं किया है । यहाँ मैं बाबा के पुराने सत्संग की रिकॉर्डिंग सुनता हूँ तो मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं । बाबा जैसी कथा, उनके जैसा प्रवचन तो कोई नहीं कर सकता है । बाबा मुझे यहाँ अपनी गाड़ी में बिठाकर प्रतिदिन नीचे पदगान में ले जाते हैं और अपने साथ ही मुझे वहाँ से लाते हैं । यहाँ एक सन्त ने मुझे एक मोबाइल दिया है, उसमें दिन-रात मैं बाबा के पुराने सत्संग सुनता हूँ । मेरे घर में मेरे दो पुत्र अलग-अलग रहते हैं, जब मैं वहाँ जाऊँगा तो उनके घरों में भी बाबा के सत्संग के स्पीकर लगा दूँगा, जिससे कि घर में चौबीस घंटे बाबा की कथा चलती रहे और उसको सुनकर घर वालों का कल्याण हो जाए ।

जब पहली बार बाबा से अपने गाँव में मेरी भेंट हुई थी, उससे पहले न तो मैं बाबा को जानता था और न ही बाबा मुझे जानते थे । सबसे पहले बाबा मुखराई में जब आये तो मेरे ही घर में आये थे । हर साल जब बाबा ब्रजयात्रा में मेरे गाँव आते तो मैं उनको अपने घर में ले जाता था, उनका सम्मान करता था । बाबा ने मेरे गाँव में प्रभात फेरी चालू करायी । प्रभात फेरी से सभी को बहुत लाभ हुआ । पहले हमारे गाँव में बरसात के मौसम में ऐसे जन्तर होते थे कि उसके कारण भैंसें मर जाती थीं । हर साल, हर गाँव में ऐसा होता था । जबसे हम लोगों के गाँवों में बाबा महाराज ने प्रभात फेरी चलवाई है, तब से इस प्रकार के जन्तर होना बन्द हो गये और भैंसों का मरना बन्द हो गया ।

जब बाबा मेरे गाँव में आते थे तो उनका सादा वेष रहता था, एक गाती और कुर्ता पहनते तथा एक दुपट्टा ओढ़ते थे । चौबीस घंटे वे भजन करते रहते थे । बाबा के मेरे घर आने से मेरे सभी संकट दूर हो गये । बाबा मुझे बहुत पहले से ही मानमन्दिर बुलाते रहते थे । इतने सालों बाद अब मैं यहाँ रहने आया हूँ और यहाँ मुझे इतनी शान्ति मिली है, इतना आनन्द मिला है कि मैं तो अब पश्चात्ताप करता हूँ कि मैं पहले ही क्यों नहीं यहाँ आ गया ? यह भी समय की ही बात है, तब समय ने मुझे यहाँ आने नहीं दिया । यहाँ रसमण्डप में संध्या को जो संकीर्तन आराधना होती है, रास नृत्य होता है, यह मुझे बहुत अच्छा लगता है । ऐसी आराधना ब्रज तो क्या, पूरे भारत में कहीं नहीं होती है । मुझे तो रास में नृत्य करने वाली बालिकायें साक्षात् श्रीजी की सखियाँ प्रतीत होती हैं । श्रीबाबा ने ये जो आराधना चलाई है, कोई और तो इसे क्या करेगा, दूसरे लोग तो इसके बारे में सोच भी नहीं सकते हैं । इसके साथ ही पहले जो बाबा महाराज सुबह और शाम का सत्संग देते थे, उसको मैं मोबाइल पर प्रतिदिन सुनता हूँ, उसे सुनकर मैं सोचता हूँ कि बाबा कथा में जो सिद्धान्त बताते हैं, ऐसा भारत में कोई अन्य सन्त नहीं बता सकता, उनकी कथा कहने की शैली ही ऐसी है कि मन को संसार से बिलकुल अलग हटा देती है । बाबा का सत्संग प्रतिदिन सुनने से माया-मोह में फँसा मन अवश्य ही उससे दूर हो जाएगा और भगवान् की सच्ची भक्ति प्राप्त होगी । बाबा का सत्संग सुनने से मेरा तो मन तृप्त नहीं होता है, इच्छा होती है कि बार-बार बाबा की वाणी सुनता रहूँ । मैं तो राधारानी से, गिरिराज बाबा से यही प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आयु बढ़ जाए । मैं तो बाबा को अपनी आयु समर्पित करने को भी तैयार हूँ ।

बाबा मुझे बता रहे थे कि जब मैं नया-नया ब्रज में आया था तो बड़े ही कठोर वैराग्य से रहता था । एक बार मैं राधा कुण्ड गया तो जाड़े के मौसम में सारी रात मैंने राधा कुण्ड के किनारे हाथ सिकोड़कर बिना गर्म कपड़े के ही बिता दी । बाबा की बात सुनकर मैंने उनसे कहा कि आपने ऐसा क्यों किया ? राधाकुण्ड से मुखराई का रास्ता दस मिनट का ही है, आपने जाड़े में इतना कष्ट सहा, आप मेरे गाँव में मेरे घर आ जाते तो कितना अच्छा होता, मुझे भी आपकी सेवा का अवसर मिलता और आपको इतना कष्ट न सहना पड़ता ।

मैं पहले पहलवान था, व्यायाम बहुत करता था । बाबा मुझसे जब भी मिलते, यही कहते थे कि भजन करो, पहलवानी में कुछ नहीं रखा है । बाबा एक दोहा कहते थे – भूत विद्या मल्लई, बारह साल चल्लई ।

भूत विद्या और पहलवानी बारह वर्ष से अधिक नहीं चल पाती है । इसलिए तुम भक्ति के पहलवान बनो ।

जब मेरे गाँव में ब्रजयात्रा आती थी और मैं बाबा से मिलता था तो बाबा मुझसे यात्रा में चलने के लिए कहा करते थे लेकिन मेरा दुर्भाग्य है कि मैं कभी यात्रा में नहीं जा सका । अपने गाँव में मैं देखता था कि शाम को कथा से पहले बाबा नृत्य करते थे । उस समय तो बाबा का स्वास्थ्य बढ़िया था तो नृत्य करते समय बाबा ऐसे मालूम पड़ते थे जैसे साक्षात् श्रीकृष्ण ही नृत्य कर रहे हों । उन्हें देखकर लोगों की आँखों में आँसू आ जाते थे ।

मैंने पहले बाबा के बारे में सुना था कि उन्होंने यहाँ अखाड़ा भी खोला था और गाँव के लड़कों को कुश्ती कराते थे, स्वयं बाबा भी कुश्ती लड़ते थे । बाबा ब्रजवासियों से बहुत प्रेम करते हैं और ब्रजवासी भी बाबा से बहुत प्रेम करते हैं । बाबा इतने दयालु हैं कि अपने मानमन्दिर के दरवाजे उन्होंने सबके लिए खोल रखे हैं । जिसको भी यहाँ आना हो चला आये और अपना जीवन सँवार ले । अभी भी बाबा के आश्रय में कितने ही लोग यहाँ रह रहे हैं और कोई भी दुखी नहीं है, सभी बाबा महाराज की कृपा से बड़े आनन्द में रह रहे हैं । बाबा सभी का बड़ा ध्यान रखते हैं । बीमारी में और इतनी अधिक उम्र में सबका ध्यान रखना कोई साधारण बात नहीं है । तुम लोग देखना कि भविष्य में बाबा का यश सारी दुनिया में बहुत अधिक फ़ैल जाएगा । मुझे मानमन्दिर में कई दिन रहते हो गये, मैंने बाबा को कभी सोते हुए नहीं देखा; केवल एक-दो घंटे को ही वे सोते हैं; ऐसे ब्रज व ब्रजवासियों के प्रेम-सूर्य बाबाश्री को हमारा बारम्बार नमन है ।

राधाजन्म-बधाई

राधा जनम भयौ बरसाने, आय नन्द यशोदा धाय
सुन सुन फूलीं जसुदा माई,
लिये गोद में कुँवर कन्हाई,
गईं जहाँ बज रही बधाई,
नाचैं गावैं गीत मनोहर, आनन्द नहीं समाय ।
ब्रज गोपी महलन में आवैं,
कन्या लै के गोद खिलावैं,
जसुमति कीरति हँसैं हँसावैं,
या बेटी के ऊपर लाखों बेटा हू नहिं भाय ।
कान्हा को राधा पै वारैं,
तन मन प्राण सबै न्यौछारैं,
देवन को अंचरा पैसारें,
देख देख जसुदा की करनी कीरतिहू मुसकाय ।
नंद वृषभानु सभा में ठाढ़े,
कौंरी भर भर मिलै जु गाढ़े,
पौरी में बज रहे नगाड़े,
खुर और सींग मढ़ी सोने ते ऐसी दीनी गाय ॥

गौ–सेवकों की जिज्ञासा पर माताजी गौशाला का Account number दिया जा रहा है –

SHRI MATAJI GAUSHALA, GAHVARVAN,BARSANA, MATHURA
Bank – Axis Bank Ltd ,
A/C – 915010000494364
IFSC – UTIB0001058
BRANCH – KOSI KALAN,
MOB. NO. – 9927916699

'मान मन्दिर' लीलास्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है इस अति विलक्षण लीलास्थली के पुनुरुद्धार कार्य में जुड कर 'धाम-सेवा' का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें

प्राचीन लीलास्थली श्री मान मन्दिर के जीर्णोद्धार हेतु सेवा-राशि दान करने वाले महानुभावों की सूची

Date	Particulars	Voucher Type	Voucher No.	Narration
10-Jul-24	HDFC-59109927338666	Mandir Sewa	SMB/00461/24-25	Damodar Industries Limited
26-Jul-24	HDFC-59109927338666	Mandir Sewa	SMB/00493/24-25	Sakshi Rajesh Manwani
30-Jul-24	HDFC-59109927338666	Mandir Sewa	SMB/00500/24-25	Radhika Navin Mehta
06-Aug-24	HDFC-59109927338666	Mandir Sewa	SMB/00584/24-25	Smt. Kiran Devi Swarnkar
06-Aug-24	HDFC-59109927338666	Mandir Sewa	SMB/00583/24-25	Rekha Yadav
11-Jul-24	HDFC-59109927338666	Mandir Sewa	SMB/00459/24-25	Oasis Securities Limited
15-Jul-24	HDFC-59109927338666	Mandir Sewa	SMB/00452/24-25	Indar Kumar Bagri
30-Jul-24	HDFC-59109927338666	Mandir Sewa	SMB/00501/24-25	Radhika Navin Mehta
28-May-24	HDFC-59109927338666	Mandir Sewa	SMB/00279/24-25	Dinesh Kumar Agarwal
10-Jul-24	HDFC-59109927338666	Mandir Sewa	SMB/00462/24-25	Nand Kishor

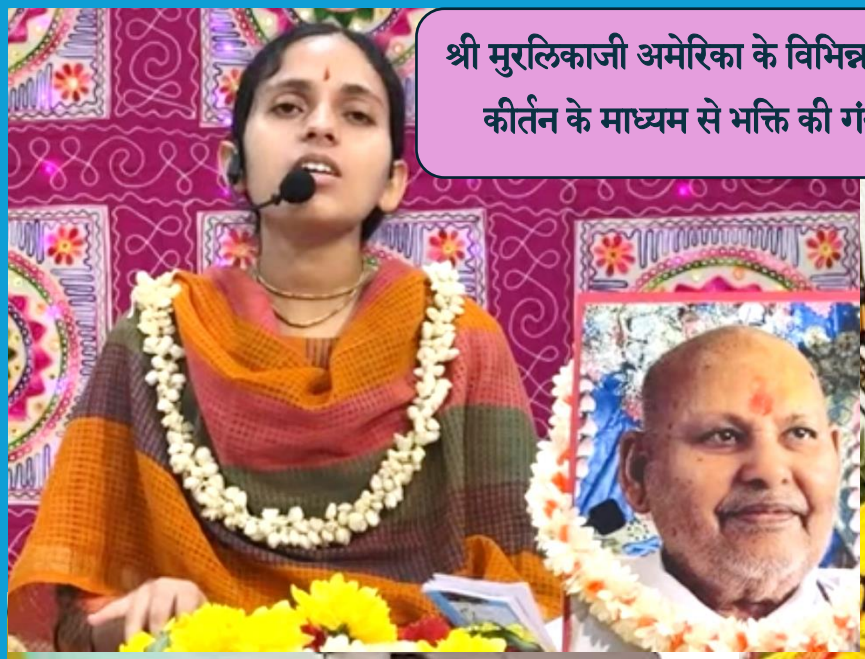

श्री मुरलिकाजी अमेरिका के विभिन्न शहरों में कथा-कीर्तन के माध्यम से भक्ति की गंगा बहाते हुए

श्री नरसिंहदासजी महाराज व श्रीजी शर्मा ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न शहरों में कथा-कीर्तन की रसधारा प्रवाहित करते हुए

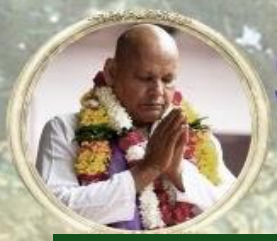

श्री मानमंदिर

प्रस्तावित पुनरुद्धार रेखांकित चित्र

'मान मन्दिर' लीलास्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है इस अति विलक्षण लीलास्थली के पुनरुद्धार कार्य में जुड कर 'धाम-सेवा' का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें

मान मंदिर लीला स्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है
इस अति विलक्षण लीला स्थली के पुनरुद्धार कार्य में जुड़ कर धाम सेवा का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें
सेवा राशि देकर रसीद अवश्य प्राप्त करें।

ACCOUNT NUMBER: 59109927338666
IFSC CODE: HDFC0000268
BANK: HDFC BANK LTD
BRANCH: BSA COLLEGE, MATHURA
संपर्क :9927338666
www.maanmandir.org
आपकी सेवा राशि आयकर अधिनियम 80G/12A के अंतर्गत आयकर छूट के लिए मान्य है
रजिस्ट्रेशन नंबर AADTS716DEF2021401

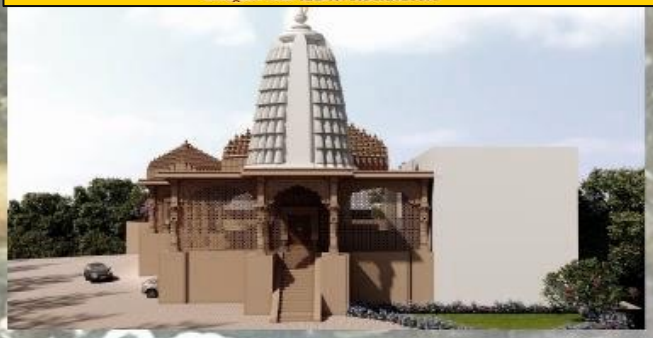

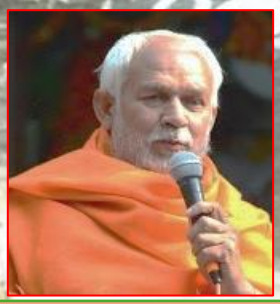

कार्यकारी अध्यक्ष -
राधाकान्त शास्त्री
मोबा. - 9927338666

ACCOUNT NAME
SHRI MAAN BIHARI
LAL MANDIR SEVA
ACCOUNT NUMBER: 59109927338666
IFSC CODE: HDFC0000268
BANK: HDFC BANK LTD
BRANCH: BSA COLLEGE, MATHURA

मान मंदिर लीला स्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है
इस अति विलक्षण लीला स्थली के पुनरुद्धार कार्य में जुड़ कर धाम सेवा का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें

श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान ट्रस्ट, गह्वरवन, बरसाना (मथुरा)
www.maanmandir.org; संपर्क :9927338666

QR कोड

RNI REFERENCE NO. 1313397- REGISTRATION NO. UP BIL-2017/72945-TITLE CODE UP BIL-04953 POSTAL REGD.NO. 093/2024-2026 श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान के लिए प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक राधाकांत शास्त्री द्वारा 'गुप्ता प्रिन्टिंग प्रेस, खरौट गेट, कोसीकलाँ, मथुरा. उत्तरप्रदेश' से मुद्रित एवं मान मन्दिर सेवा संस्थान, गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.) से प्रकाशित [AGRA/WPP-12/2024-2026 AT 31.12.26]